मेरी खेती

किसानों की बात मेरी खेती के साथ

नवंबर, 2023 मूल्य: 49 रु.

- खेत खलियान
- सरकारी नीतियां
- मौसम व अन्य कृषि सुझाव
- सब्ज़ी
- फूल
- औषधीय खेती
- पशुपालन - पशुचारा
- प्रगतिशील किसान

विषय सूची

सम्पादकीय	
सलाहकार मंडल	
खेत खलियान	01-02
सब्ज़ी	03-05
फल	06-10
फूल	12-13
मशीनरी	14-16
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	18-19
सामान्य लेख	21-23
सरकारी नीतियां	24-32
किसान समाचार	33-40
औषधीय खेती	41-42
पशुपालन-पशुचारा	43-44
मिट्टी की सेहत - खाद	45-46
प्रगतिशील किसान	47-48

विज्ञापन के लिए संपर्क करें: +91 9899991906, +91 8800777501

सम्पादकीय

पराली: पोलूशन या सोलूशन:

धान की फसल कटने के बाद किसान को जल्दी से गेहूं या दूसरी फसल बोने की जल्दी रहती है, जिसकी वजह से किसान पराली को जलाना उचित समझता है जो की उसके लिए नुकसानदायक है. पहले तो हम धार्मिक महत्व से भी सोचें तो किसी भी खेत को आग लगाना भी शुभ नहीं है इससे बहुत से जीवों की हत्या होती है. जो किसान अपने खेत के साँप को नहीं मारता वो इतने सारे जीवों को जलाकर कैसे मार सकता है।

अगर वैज्ञानिक दृश्टिकोण से भी सोचें तो आग लगाना कहीं से भी सही नहीं है क्यों की जो मित्र कीट होते हैं वो इस आग में जलकर मर जाते हैं और उससे हमारे खेत में आगे होने वाली फसल पर उसका बहुत भारी दुष्परिणाम देखने को मिलता है। जो मित्र कीट हमारी फसल के लिए लाभदायक होते हैं जो मिटटी को उपजाऊ बनाते हैं तथा फसल के उत्पादन को बढ़ने में हमारी सहायता करते हैं उनको जल जाने से ये प्रक्रिया नहीं हो पाती है इससे हमारे उत्पादन में बहुत गिरावट आती है।

अब बात करते हैं की आखिर किसानों को आग लगानी ही क्यों है? क्या इसके पीछे किसान का आलस या साधन की कमी तो नहीं है ? सरकार से किसानों की क्या उम्मीदें हैं? क्या सरकार किसानों को जो सब्सिडी दे रही है उसकी सटीक जानकारी किसानों को है? सरकार जो भी नई नई योजनाएं ला रही है उसकी जानकरी किसानों को है? या बस सरकार ने योजना बना के अफसरों के ऊपर डाल दी और सोच लिया की ये किसानों तक पहुंच जाएगी ? सरकार केंद्र की हो या किसी राज्य की सभी किसान की आमदनी बढ़ाने के लिए फिक्रबंद होती हैं और ये छोटे छोटे उपाय ही किसान की आमदनी बढ़ने में सहायक होंगी।

जरूरत इस बात की है कि किसानों को अपने अधिकारों के लिए खुद ही लड़ना पड़ेगा और सरकार और अपनी मेहनत से आगे बढ़ना पड़ेगा।

पराली को जलाने की बजाय उसके बण्डल बना के उससे भी किसान अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं लेकिन सरकार को भी किसानों को ये मशीनें सस्ते दामों में मुहैया कराने की जरूरत है. अगर किसान और सरकार दोनों साथ मिलकर काम करें तो देश भी तरक्की करेगा और किसान की माली हालत में भी सुधार आएगा।

अगर सब्सिडी देनी है तो ट्रेक्टर और उपकरण दोनों पर दी जानी चाहिए न की सिर्फ किसी भी एक पर अगर किसान पास ट्रेक्टर खरीदने के पैसे नहीं होंगें तो किसान उपकरणों पर मिलने वाली सब्सिडी का क्या करेगा? और अगर ट्रेक्टर पर सब्सिडी मिलती है तो उपकरण कैसी खरीदेगा?
विचारणीय प्रश्न

धन्यवाद,

-संपादक
दिलीप यादव

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति
आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी
एंड एनिमल साइंस

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत)
उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर
राजस्थान

डॉ. जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक
आई ए आर आई

डॉ. हरि शंकर गॉड
पूर्व कुलपति, एसवीबीपीयूएटी, मेरठ,
साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

दिलीप यादव
विशेषज्ञ, मेरीखेती

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

डॉ एसके सिंह
प्रोफ़ेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र
प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा,
बिहार

BRAJDHAM
BRAJDHAM
FARMS & RESORT
Explore The Nature
Starting ₹999
www.brajdhamfarms.com
BOOK NOW

लोबिया की इन पांच किस्मों से किसानों को मिलेगा बेहतरीन मुनाफा

लोबिया की उन्नत किस्मों को खेत में उगाने से किसान 50 दिनों के अंतर्गत तकरीबन 100 से 125 क्विंटल तक शानदार उत्पादन हांसिल कर सकते हैं। बाजार में ऐसी विभिन्न तरह की लोबिया की किस्में उपलब्ध हैं। परंतु, बेहतरीन उत्पादन अर्जित करने के लिए पंत लोबिया, लोबिया 263, अर्का गरिमा, पूसा बारसाती एवं पूसा ऋतुराज किस्मों का चुनाव करें।

किसान भाई लोबिया की फसल से शानदार मुनाफा उठाने के लिए किसान को अपने खेत में शानदार और उम्दा किस्मों को लगाना चाहिए। लोबिया एक दलहनी फसल की श्रेणी के अंतर्गत आने वाली फसल है, जिसकी खेती भारत के छोटे और सीमांत किसानों के द्वारा सबसे ज्यादा की जाती है। क्योंकि यह फसल कम भूमि में भी अच्छी उत्पादन देती है। लोबिया की खेती खरीफ एवं जायद दोनों ही सीजन में की जाती है। परंतु, इसकी उन्नत किस्मों से किसान हर एक सीजन में लोबिया की बढ़िया पैदावार अर्जित कर सकते हैं। इसी क्रम में आज हम आपके लिए लोबिया की पांच उन्नत किस्मों की जानकारी लेकर आए हैं, जिसे लगाने के पश्चात आप प्रति एकड़ 100 से 125 क्विंटल उपज हांसिल कर सकते हैं। साथ ही यह किस्में 50 दिनों के सामान्यतः पककर पूरी तरह से तैयार हो जाती है।

लोबिया की पांच शानदार उन्नत किस्में

पंत लोबिया किस्म

लोबिया की इस प्रजाति के पौधे तकरीबन डेढ़ फीट तक ऊंचे होते हैं। पंत लोबिया को खेत में बोने के 60 से 65 दिन पककर तैयार होने में लग जाते हैं। लोबिया की यह किस्म प्रति हेक्टेयर 15 से 20 क्विंटल तक उपज प्रदान करती है।

लोबिया 263 किस्म

लोबिया की यह किस्म अगेती फसल है, जो खेत में 40 से 45 दिनों के समयांतराल में पक जाती है। लोबिया 263 किस्म से किसान प्रति हेक्टेयर लगभग 125 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

अर्का गरिमा किस्म

लोबिया की अर्का गरिमा किस्म बारिश व बसंत ऋतु के दौरान शानदार उत्पादन देती है। अर्का गरिमा किस्म 40-45 दिनों के समयांतराल में पक जाती है। बतादें, कि प्रति हेक्टेयर तकरीबन 80 क्विंटल तक पैदावार देती है।

पूसा बरसाती किस्म

लोबिया की इस किस्म के नाम से ही ज्ञात हो जाता है, कि किसान इसे अपने खेत में बारिश के समय लगाएं, तो उन्हें बेहतरीन पैदावार मिलेगी। लोबिया की पूसा बरसाती किस्म की फलियां हल्के हरे रंग की होती है। यह किस्म लगभग-लगभग 26 से 28 सेमी लंबी होती है। साथ ही, यह खेत में 45-50 दिन के भीतर पक जाती है। यह किस्म प्रति हेक्टेयर 85-100 क्विंटल तक उत्पादन देती है।

पूसा ऋतुराज किस्म

इस किस्म की लोबिया खाने में बेहद ही ज्यादा अच्छी मानी जाती है। इसकी किस्म की फलियां हरे रंग की होती हैं। साथ ही, यह प्रति हेक्टेयर लगभग 75 से 80 क्विंटल तक उपज प्राप्त होती है।

विश्व प्रसिद्ध सोजत मेहंदी की सबसे ज्यादा खेती कहाँ होती है

राजस्थान के पाली जनपद में सोजत मेहंदी की सबसे अधिक खेती होती है। यहां के छोटे-बड़े कारोबारी मेहंदी का कारोबार कर के अपने परिवार का भरण-पोषण बेहद अच्छे ढ़ंग से कर रहे हैं। यहां की मेहंदी को जीआई टैग भी प्राप्त हो चुका है। जीआई टैग मिलने के उपरांत यहां के कारोबारियों की जिम्मेदारियां काफी बढ़ गई हैं। अपने कारोबार के प्रति इतने इमानदार हैं, कि आज सोजत मेहंदी पूरी दुनिया की सर्वाधिक विश्वसनीय मेहंदी ब्रांड बन चुका है।

मेहंदी का नाम कान में पड़ते ही हमारे दिमाग में हाथों पर तरह-तरह की उकेरी गई डिजाईन उभर आती हैं। वहीं, लाल रंग की मेहंदी के लिए सोजत मेंहदी पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बना चुकी है। इस मेहंदी के साथ महिलाओं का भरोशा इतना मजबूत है, कि जिसकी कोई हद नहीं है। किसी और मेहंदी को लेकर सभी को एक दुविधा सी रहती है, कि ये हाथ में लगाने के उपरांत चटक रंग छोड़ेगा अथवा नहीं। वहीं, कोई दूसरी मेहंदी इतना लाल रंग छोड़ रही है, तो एक दुविधा ये भी रहती है, कि कहीं इसमें कोई रसायन तो नहीं मिलाया गया है। परंतु, सोजत मेहंदी के साथ ऐसा कुछ नहीं है।

सोजत मेहंदी की दिन-प्रतिदिन बढ़ती विश्वसनीयता

लोगों के बीच इसकी विश्वसनीयता दिन-प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है। जानकारी हो, कि राजस्थान के पाली जनपद में सोजत मेहंदी की सबसे ज्यादा खेती होती है। यहां के छोटे-बड़े व्यापारी मेहंदी का व्यापार कर के अपने परिवार का भरण-पोषण काफी अच्छे से कर रहे हैं। यहां की मेहंदी को जीआई टैग भी प्राप्त हो चुका है। जीआई टैग मिलने के बाद यहां के कारोबारियों की जिम्मेदारियां काफी बढ़ गई हैं। वहां के कारोबारी अपने कारोबार के प्रति इतने इमानदार हैं, कि आज सोजात मेहंदी संपूर्ण विश्व का सबसे ज्यादा विश्वसनीय मेहंदी ब्रांड बन चुका है।

मेहंदी को महिला श्रृंगार का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता है

प्रत्येक धर्म की महिलाओं के श्रृगांर में मेहंदी का अपना विशेष महत्व है। एक तरह से हम कह सकते हैं, कि मेहंदी के बिना किसी भी धर्म की महिलाओं का श्रृंगार अधूरा ही रहता है। विशेष अवसर पर मेहंदी की महत्वता काफी बढ़ जाती है। विशेषकर मांगलिक अवसर पर अथवा तीज-त्योहार में सावन के महीने में महिलाएं हाथों में मेहंदी लगा कजरी गाती हैं। इन समस्त अवसरों पर महिलाओं की पहली पसंद सोजत मेहंदी ही है। क्योंकि, यह पूरी तरह से रसायन मुक्त होता है, जिसकी वजह से हाथों में जो चटक रंग चढ़ता है। सोजत मेहंदी का अपना रंग होता है, बिल्कुल नेचुरल जिससे किसी भी तरह से त्वचा को नुकसान नहीं पहुंचता है।

महिलाओं की सोजत मेहंदी के व्यापार में हिस्सेदारी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आज हर क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता बढ़ती ही जा रही है। महिलाओं का विश्वास जितना आज सोजत मेहंदी पर उतना किसी और मेहंदी पर नहीं होता है। आज बहुत सारी महिलाऐं व्यूटी पार्लर चला रहीं हैं अथवा स्वतंत्र रुप से शादी-विवाह में जाकर मेहंदी लगाती हैं। दरअसल, वे सभी सामान्यतः सोजत मेहंदी ही लगाती हैं। एक आंकड़े के अनुसार, मेहंदी के कारोबार में 80 प्रतिशत महिलाओं की हिस्सेदारी है।

कम लागत और कम समयावधि में तैयार होने वाली तोरई की किस्में

आज हम इस लेख के अंदर आपको तोरई की कुछ उन्नत किस्मों के विषय में जानकारी देंगे। तोरई की उन्नत किस्मों के अंतर्गत घिया तोरई, पूसा नसदार, सरपुतिया, को.-1 (CO.-1), पी के एम 1 (PKM 1) आदि प्रमुख फसल हैं। इनकी खेती करने पर किसान भाइयों को काफी बेहतरीन पैदावार हांसिल होती है।

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि कोई भी फसल के उत्पादन से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उसकी अच्छी किस्मों की जानकारी होनी चाहिए। जिससे कि उत्पादन के साथ–साथ ज्यादा मुनाफा भी हांसिल हो सके। इसी कड़ी में आज हम आपको तोरई की कुछ उन्नत प्रजतियों की जानकारी देने जा रहे हैं। तोरई की उन्नत किस्मों में घिया तोरई, पूसा नसदार, सरपुतिया, को.-1 (CO.-1), पी के एम 1 (PKM 1) इत्यादि प्रमुख हैं। इनकी बुवाई कर किसानों को काफी अच्छी पैदावार हांसिल होती है। इसके साथ-साथ मुनाफा भी खूब होता है। किसान इन तोरई की किस्मों के माध्यम से अच्छा खासा मुनाफा कमा सकते हैं। इसकी वजह यह है, कि इनके उत्पादन के मुताबिक लागत अन्य बीजों की तुलना में कम होती है। इसके साथ ही यह कम समयावधि में तैयार हो जाती हैं।

कम लागत और समयावधि में तैयार होने वाली तोरई की किस्में

को.-1 (CO.-1)

बतादें, कि इस किस्म को तमिलनाडु के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया है। इस किस्म के फल का आकार 60 – 75 से.मी. लम्बा होता है। इसके अतिरिक्त लम्बे, मोटे, हल्के, हरे रंग का होता है। इस किस्म की पैदावार क्षमता 140-150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। पहली तुड़ाई बुवाई के 55 दिनों के उपरांत की जा सकती है।

पी के एम 1 (PKM 1)

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस किस्म के फल देखने में गहरे हरे रंग के होते हैं। इसके साथ ही फल दिखने में पतला, लम्बा, धारीदार एवं हल्का सा मुड़ा हुआ होता है। इससे 280-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन मिल सकता है।

घिया तोरई

तोरई की इस किस्म के फल का रंग हरा होता है। भारत में इस प्रजाति की खेती सामान्य तौर पर ज्यादा की जाती है। इस किस्म के अगर फलों की बात की जाए, तो इसके फल का छिलका काफी पतला होता है। तोरई की इस किस्म में विटामिन की मात्रा ज्यादा पायी जाती है।

पूसा नसदार

तोरई की पूसा नासदार किस्म का फल हल्का हरा होता है। इसकी ऊपरी सतह पर उभरी नसों की आकृति होती है। इस किस्म का गूदा सफेद और हरा होता है। इसके साथ ही फल की लंबाई 12-20 सेमी. तक होती है। इस किस्म की विशेषता यह है, कि इसकी उत्पादन क्षमता 150-160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

सरपुतिया

तोरई की सरपुतिया किस्म के फल पौधों पर गुच्छों में लगते हैं। वहीं अगर इनके आकार की बात करें तो यह छोटा दिखाई देता है। साथ ही, इस प्रजाति के फलों पर भी उभरी हुई धारियां बनी होती है। इसके फलों का बाहरी छिलका मोटा और मजबूत होता है। इस किस्म की तोरई मैदानी इलाकों में ज्यादा उगाई जाती हैं।

मटर की इन उन्नत किस्मों से बेहतरीन उत्पादन

किसान इस रबी सीजन में मटर की इन उन्नत किस्मों से बेहतरीन उत्पादन उठा सकते हैं

किसानों के द्वारा रबी के सीजन में मटर की बिजाई अक्टूबर माह से की जाने लगती है। आज हम आपको इसकी कुछ प्रमुख उन्नत किस्मों के विषय में जानकारी देने जा रहे हैं। किसान कम समयावधि में तैयार होने वाली मटर की किस्मों की बुवाई सितंबर माह के अंतिम सप्ताह से लेकर अक्टूबर के बीच तक कर सकते हैं। इसकी खेती से किसान अपनी आमदनी को दोगुना तक कर सकते हैं। बतादें, कि इसमें काशी नंदिनी, काशी मुक्ति, काशी उदय और काशी अगेती प्रमुख फसलें हैं।

इनकी विशेष बात है, कि यह 50 से 60 दिन के दौरान पककर तैयार हो जाती हैं। इससे खेत शीघ्रता से खाली हो जाता है। इसके पश्चात किसान सुगमता से दूसरी फसलों की बिजाई कर सकते हैं। किसान भाई कम समयावधि में तैयार होने वाली मटर की प्रजातियों की बुवाई सितंबर के अंतिम सप्ताह से लेकर अक्टूबर के बीच तक कर दी जाती है।

मटर की उन्नत किस्म

मटर की उन्नत किस्म काशी नंदिनी

इस किस्म को साल 2005 में विकसित किया गया था। इसकी खेती जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल और पंजाब में की जाती है। इससे प्रति हेक्टेयर औसतन 110 से 120 क्विंटल तक पैदावार हांसिल की जा सकती है।

मटर की उन्नत किस्म काशी मुक्ति

यह किस्म मुख्य तौर पर झारखंड, उत्तर प्रदेश, पंजाब और बिहार के लिए अनुकूल मानी जाती है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इससे प्रति हेक्टेयर 115 क्विंटल तक उत्पादन हांसिल हो सकता है। इसकी फलियां और दाने काफी बड़े होते हैं। मुख्य बात यह है, कि इसकी विदेशों में भी काफी मांग रहती है।

मटर की उन्नत किस्म काशी अगेती

यह किस्म 50 दिन की समयावधि में पककर तैयार हो जाती है। बतादें, कि इसकी फलियां सीधी और गहरी होती हैं। इसके पौधों की लंबाई 58 से 61 सेंटीमीटर तक होती है। इसके 1 पौधे में 9 से 10 फलियां लग सकती हैं। इससे प्रति हेक्टेयर 95 से 100 क्विंटल तक का पैदावार प्राप्त हो सकता है।

मटर की उन्नत किस्म काशी उदय

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस प्रजाति को साल 2005 में तैयार किया गया था। इसकी खासियत यह है, कि इसकी फली की लंबाई 9 से 10 सेंटीमीटर तक होती है। इसकी खेती प्रमुख रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड में की जाती है। इससे प्रति हेक्टेयर 105 क्विंटल तक की पैदावार मिल सकती है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इसकी खेती से किसान अपनी आमदनी को दोगुना तक कर सकते हैं। इसमें काशी मुक्ति, काशी उदय, काशी अगेती और काशी नंदिनी प्रमुख हैं। इनकी विशेष बात है, कि यह 50 से 60 दिन के अंदर तैयार हो जाती हैं। इससे खेत जल्दी खाली हो जाता है। इसके उपरांत किसान आसानी से दूसरी फसलों की बुवाई कर सकते हैं।

लोबिया दाल में सेहत के लिए बेहद फायदेमंद पोषक तत्व विघमान रहते हैं

लोबिया के अंदर काफी ज्यादा मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है, जिसकी वजह से इसे प्रोटीन का पावरहाउस भी कहा जाता है। लोबिया केवल इंसान के लिए ही नहीं बल्कि पशुओं की सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद होती है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि लोबिया में प्रोटीन, फाइबर, विटामिन, खनिज, एंटीऑक्सीडेंट एवं बहुत सारे अन्य पोषक तत्व भी भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं। हमारे शरीर को दीर्घकाल तक स्वस्थ बनाए रखने के लिए प्रोटीन एक जरूरी तत्व होता है, जो शरीर की मांसपेशियों को सशक्त और विभिन्न प्रकार के रोगों से लड़ने में भी सहायता करता है।

जब भी प्रोटीन की बात होती है, तो इसका मुख्य स्त्रोत दूध, घी इत्यादि को माना जाता है। परंतु, क्या आपको मालूम है, कि इन सब से भी कहीं ज्यादा प्रोटीन की मात्रा लोबिया में होती है। लोबिया में काफी अच्छी मात्रा में प्रोटीन होता है। लोबिया को सुपरफूड भी कहा जाता है। क्योंकि यह प्रोटीन का पावर हाउस होता है। यह केवल इंसानों के लिए ही नहीं बल्कि पशुओं के शरीर के लिए भी बेहद लाभकारी होता है। पशुओं के लिए लोबिया हरा चारा होता है, जिससे खाने से दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन की क्षमता बढ़ काफी हद तक बढ़ जाती है।

लोबिया के अंदर प्रोटीन, फाइबर, विटामिन, खनिज, एंटीऑक्सीडेंट तथा विभिन्न अन्य पोषक तत्वों की मात्रा भी ज्यादा पाई जाती है। यह हरे रंग के दानेदार आकार में होता है। आज हम आपको लोबिया के फायदे और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी के विषय में बताऐंगे।

लोबिया में पोषक तत्व कितनी मात्रा में पाए जाते हैं

- प्रोटीन की मात्रा- 100 ग्राम लोबिया में तकरीबन 25-30 ग्राम प्रोटीन होता है।
- फाइबर की मात्रा- 16-25 ग्राम लोबिया में लगभग 100 ग्राम तक फाइबर पाया जाता है।
- कॉम्प्लेक्स कार्ब्स की मात्रा- 60-65% कार्बोहाइड्रेट लोबिया में होती है।
- आयरन की मात्रा- लोबिया के अंदर भरपूर मात्रा में आयरन होता है। इसके अतिरिक्त इसमें विटामिन C और फोलेट की भी भरपूर मात्रा उपलब्ध होती है।
- ये ही नहीं बल्कि लोबिया की शुरुआती ताजी पत्तियों एवं डंठल में भी पोषक तत्व विघमान होते हैं। इसमें कुछ फीसदी कच्चा प्रोटीन, 3.0% ईथर का अर्क और 26.7% कच्चा फाइबर इत्यादि होता है।
- लोबिया का सेवन करने से क्या-क्या लाभ होते हैं
- यदि आप नियमित तौर पर लोबिया का सेवन करते हैं तो निश्चित तौर पर आपका वजन जल्दी से कम होने लगेगा।
- लोबिया के सेवन से पाचन तंत्र काफी मजबूत बनता है।
- यदि आप ह्रदय संबंधित किसी भी रोग से ग्रसित हैं, तो आप लोबिया का सेवन करें।
- रात को सटीक समय पर नींद ना आने की बीमारी और इससे संबंधित अन्य बीमारी के लिए भी लोबिया बेहद फायदेमंद है।
- लोबिया इम्युनिटी को बूस्ट करने में काफी सहयोग करता है।
- लोबिया ब्लड शुगर लेवल को काबू में करता है। यदि आप मधुमेह यानी डायबिटीज की बीमारी से जूझ रहे हैं, तो लोबिया का सेवन जरूर करें।

फल

मिठास से भरपूर आम की इस सदाबहार प्रजाति से बारह महीने फल मिलेंगे

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आप आम की थाईलैंड वैराइटी यानी कि थाई बारहमासी किस्म से किसान हर सीजन में बेहतरीन उत्पादन अर्जित कर सकते हैं। यह आम खाने में काफी मीठा होता है। आम की थाईलैंड प्रजाति से किसान वर्ष भर में तीन बार पैदावार हॉसिल कर सकते हैं। इस प्रजाति की विशेषता यह है, कि खेत में लगाने के दो वर्ष में ही फल मिलना प्रारंभ हो जाता है।

फलों के राजा आम की खेती से किसान बेहतरीन आमदनी प्राप्त करते हैं। सामान्य तौर पर इसकी खेती से किसान वर्ष में एक ही बार फल अर्जित कर पाते हैं। परंतु, आज के समय में बाजार में ऐसी विभिन्न प्रकार की आम की उन्नत प्रजातियां आ गई हैं, जिनसे कृषक वर्षभर में आम की शानदार उपज हांसिल कर सकते हैं। दरअसल, कुछ दिन पहले ही पंतनगर में आयोजित अखिल भारतीय किसान मेले में आम की बारहमासी किस्म की प्रदर्शनी लगाई गई। ऐसा कहा जा रहा है, कि आम की यह किस्म वर्ष में तीन बारी आम की बेहतरीन उत्पादन देने में समर्थ है। दरअसल, आज हम आम की उन किस्मों की बात कर रहे हैं, उसका नाम थाईलैंड किस्म का थाई बारहमासी मीठा आम है। इस किस्म की विशेषता यह है, कि थाई बारहमासी मीठा आम कम समयांतराल मतलब कि दो वर्षों में ही फल देना शुरू कर देता है। वहीं, यदि हम थाईलैंड किस्म के इस आम की मिठास पर ध्यान दें, तो यह अन्य आमों की तुलना में काफी मीठा होता है।

आम कितने सालों में आने शुरू हो जाऐंगे

थाईलैंड वैराइटी की थाई बारहमासी मीठा आम की यह प्रजाति यदि आप खेत में लगाते हैं। इसकी सही ढ़ंग से देखभाल करते हैं, तो किसान इसे लगभग दो वर्ष में ही आम के फल अर्जित कर सकते हैं।

वर्तमान में आपके दिमाग में आ रहा होगा कि शीघ्रता से आम देने की यह किस्म स्वास्थ्य व मिठास के संबंध में शायद खराब होगी। बतादें, कि यह किस्म स्वास्थ्य एवं मिठास दोनों के संबंध में ही अव्वल है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, आम की यह किस्म विषाणु युक्त मानी गई है। इसके पेड़ में हर एक मौसम में किसी भी प्रकार के वायरस का कोई विशेष प्रभाव नहीं होता है। साथ ही, किसान आम की इस प्रजाति से पांच वर्ष के उपरांत तकरीबन 50 किलो तक आम की फसल अर्जित कर सकते हैं।

आम की इस किस्म को किसने विकसित किया है

मीडिया खबरों के अनुसार, आम की यह थाईलैंड किस्म बांग्लादेश के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की गई है। इस किस्म को भिन्न-भिन्न इलाकों में विभिन्न नामों से जाना जाता है। कुछ राज्यों में थाईलैंड वैराइटी किस्म को काटी मन के नाम से भी जाना जाता है। आम की थाईलैंड किस्म की खेती पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और गुजरात के किसानों द्वारा सबसे ज्यादा की जाती है।

येलो मोजेक वायरस की वजह से महाराष्ट्र में पपीते की खेती को भारी नुकसान

आपकी जानकारी के लिए बतादें कि नंदुरबार जिला महाराष्ट्र का सबसे बड़ा पपीता उत्पादक जिला माना जाता है। यहां लगभग 3000 हेक्टेयर से ज्यादा रकबे में पपीते के बाग इस वायरस की चपेट में हैं। इसकी वजह से किसानों का परिश्रम और लाखों रुपये की लागत बर्बाद हो गई है। किसानों ने सरकार से मांगा मुआवजा।

सोयाबीन की खेती को बर्बाद करने के पश्चात फिलहाल येलो मोजेक वायरस का प्रकोप पपीते की खेती पर देखने को मिल रहा है। इसकी वजह से पपीता की खेती करने वाले किसान काफी संकट में हैं। इस वायरस ने एकमात्र नंदुरबार जनपद में 3 हजार हेक्टेयर से ज्यादा रकबे में पपीते के बागों को प्रभावित किया है, इससे किसानों की मेहनत और लाखों रुपये की लागत बर्बाद हो चुकी है। महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों में देखा जा रहा है, कि मोजेक वायरस ने सोयाबीन के बाद पपीते की फसल को बर्बाद किया है, जिनमें नंदुरबार जिला भी शामिल है। जिले में पपीते के काफी बगीचे मोजेक वायरस की वजह से नष्ट होने के कगार पर हैं।

सरकार ने मोजेक वायरस से क्षतिग्रस्त सोयाबीन किसानों की मदद की थी

बतादें, कि जिस प्रकार राज्य सरकार ने मोजेक वायरस की वजह से सोयाबीन किसानों को हुए नुकसान के लिए सहायता देने का वादा किया था। वर्तमान में उसी प्रकार पपीता किसानों को भी सरकार से सहयोग की आशा है। महाराष्ट्र एक प्रमुख फल उत्पादक राज्य है। परंतु, उसकी खेती करने वालों की समस्याएं कम होने का नाम ही नहीं ले रही हैं। इस वर्ष किसानों को अंगूर का कोई खास भाव नहीं मिला है। बांग्लादेश की नीतियों की वजह से एक्सपोर्ट प्रभावित होने से संतरे की कीमत गिर गई है। अब पपीते पर प्रकृति की मार पड़ रही है।

पपीते की खेती में कौन-सी समस्या सामने आई है

पपीते पर लगने वाले विषाणुजनित रोगों की वजह से उसके पेड़ों की पत्तियां शीघ्र गिर जाती हैं। शीर्ष पर पत्तियां सिकुड़ जाती हैं, इस वजह से फल धूप से क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। व्यापारी ऐसे फलों को नहीं खरीदने से इंकार कर देते हैं, जिले में 3000 हेक्टेयर से ज्यादा क्षेत्रफल में पपीता इस मोज़ेक वायरस से अत्यधिक प्रभावित पाया गया है। हालांकि, किसानों द्वारा इस पर नियंत्रण पाने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के उपाय किए जा रहे हैं। परंतु, पपीते पर संकट दूर होता नहीं दिख रहा है। इसलिए किसानों की मांग है, कि जिले को सूखा घोषित कर सभी किसानों को तत्काल मदद देने की घोषणा की जाए।

पपीता पर रिसर्च सेंटर स्थापना की आवश्यकता

नंदुरबार जिला महाराष्ट्र का सबसे बड़ा पपीता उत्पादक जिला माना जाता है। प्रत्येक वर्ष पपीते की फसल विभिन्न बीमारियों से प्रभावित होती है। परंतु, पपीते पर शोध करने के लिए राज्य में कोई पपीता अनुसंधान केंद्र नहीं है। इस वजह से केंद्र और राज्य सरकारों के लिए यह जरूरी है, कि वे नंदुरबार में पपीता अनुसंधान केंद्र शुरू करें और पपीते को प्रभावित करने वाली विभिन्न बीमारियों पर शोध करके उस पर नियंत्रण करें, जिससे किसानों की मेहनत बेकार न जाए।

येलो मोजेक रोग के क्या-क्या लक्षण हैं

येलो मोजेक रोग मुख्य तौर पर सोयाबीन में लगता है। इसकी वजह से पत्तियों की मुख्य शिराओं के पास पीले धब्बे पड़ जाते हैं। ये पीले धब्बे बिखरे हुए अवस्था में दिखाई देते हैं। जैसे-जैसे पत्तियां बढ़ती हैं, उन पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देने लगते हैं। कभी-कभी भारी संक्रमण की वजह पत्तियां सिकुड़ और मुरझा जाती हैं। इसकी वजह से उत्पादन प्रभावित हो जाता है।

येलो मोजेक रोग की रोकथाम का उपाय

कृषि विभाग ने येलो मोजेक रोग को पूरी तरह खत्म करने के लिए रोगग्रस्त पेड़ों को उखाड़कर जमीन में गाड़ने या नीला व पीला जाल लगाने का उपाय बताया है। इस रोग की वजह से उत्पादकता 30 से 90 प्रतिशत तक कम हो जाती है। इसके चलते कृषि विभाग ने किसानों से समय रहते सावधानी बरतने की अपील की है।

जानें सबसे महंगे ब्लैक डायमंड सेब के बारे में

BLACK DIAMOND APPLE: जानें सबसे महंगे ब्लैक डायमंड सेब के बारे में

आज हम आपको इस लेख में सबसे महंगे ब्लैक डायमंड एप्पल के बारे में बताऐंगे। दरअसल, इस सेब का उत्पादन करना काफी आसान नहीं होता है। एक ब्लैक डायमंड एप्पल की कीमत तकरीबन 500 रुपये तक होती है।

आपने अब तक सिर्फ लाल और हरे रंग का सेब ही बाजार या रसोई में देखा होगा। परंतु, आपने शायद ही कभी काले रंग का सेब देखा हो। आपको सुनकर भी आश्चर्य हो रहा होगा कि काले रंग का भी कोई सेब होता है। बतादें, कि अन्य फलों की भांति ही सेब की भी बहुत सारी वैरायटी होती हैं, जिनका स्वाद और गुण भी बिल्कुल अलग होता है। सामान्य दिनों में भी सेब की कीमतें भी काफी अच्छी रहती हैं। आज हम आपको जिस सेब के विषय में बताने जा रहे हैं, उसे 'ब्लैक डायमंड एप्पल' के नाम से जाना जाता है।

काले सेब का उत्पादन हर जगह नहीं किया जा सकता

दरअसल, यह ब्लैक डायमंड एप्पल बेहद ही दुर्लभ होता है। इसे विश्व के हर इलाके में सहजता से नहीं उगाया जा सकता। इस सेब का उत्पादन करने के लिए विशेष मौसम की जरूरत होती है। ब्लैक डायमंड एप्पल भूटान की पहाड़ियों वाले स्थान पर उगाया जाता है। सेब की इस किस्म को 'हुआ नियू' भी कहा जाता है। इस सेब के स्वाद की बात की जाए तो इसका स्वाद कुरकुरा और रसदार होता है।

ब्लैक डायमंड एप्पल सेहत में काफी लाभदायक

ब्लैक डायमंड एप्पल स्वास्थ्य के लिए भी काफी बेहतरीन साबित होता है। इसमें हाई सॉल्युबल फाइबर विघमान होते हैं, जो कि कोलेस्ट्रॉल कम करने एवं हार्ट डिजीज की रोकथाम में बेहद लाभदायक होते हैं। इसमें इनसोल्युबल फ़ाइबर भी मौजूद होते हैं, जो डाइजेशन को सुधारने में मदद करता है। ब्लैक डायमंड एप्पल में विटामिन सी और ए के साथ-साथ पोटेशियम एवं आयरन भी भरपूर मात्रा होती है। ब्लैक डायमंड एप्पल एंटीऑक्सिडेंट से भी भरपूर होता है। साथ ही, शरीर को फ्री रेडिकल्स से लड़ने में भी सहायता करता है।

काले सेब का पेड़ कितने दिन में फल देने लग जाता है

अगर हम इस सेब की कीमत की बात करें तो इसके प्रति सेब की कीमत लगभग 500 रुपये तक हो सकती है। इसकी कीमतें ऊपर नीचे होती रहती हैं। ब्लैक डायमंड एप्पल को उगाने में काफी सावधानी और विशेष तरह के स्किल्स की जरूरत पड़ती है। इसके अतिरिक्त उत्पादन के मामले में यह सेब दूसरे सेबों के मुकाबले में कम उगता है, जिसकी वजह से ब्लैक डायमंड एप्पल इतने ज्यादा महंगे होते हैं। काले सेब के पेड़ को फलदार बनने के लिए 8 वर्ष का समय लगता है। काले सेब की खेती करना किसानों के लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकता है।

डॉ. एस. के. सिंह

प्रोफ़ेसर सह मुख्य वैज्ञानिक (पौधा रोग) एवं
विभागाध्यक्ष, पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट पैथोलॉजी एवं प्रधान अन्वेषक अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (फल), डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा , समस्तीपुर बिहार

सितंबर महीने में मानसून के सक्रिय होने की वजह से बिहार एवम उत्तर प्रदेश में केला की खेती में थ्रिप्स का बढ़ता आक्रमण कैसे करें प्रबंधन?

सितम्बर महीने में मानसून के सक्रिय होने की वजह से हो रही वर्षा के कारण से वातावरण में अत्यधिक नमी देखी जा रही है , इस वजह से केला में थ्रिप्स का आक्रमण कुछ ज्यादा ही देखने को मिल रहा है। पहले यह कीट माइनर कीट माना जाता था। इससे कोई नुकसान कही से भी रिपोर्ट नही किया गया था। लेकिन विगत दो वर्ष एवं इस साल अधिकांश प्रदेशों से इस कीट का आक्रमण देखा जा रहा है। पत्तियों के गब्हभे के अंदर थ्रिप्स पत्तियों को खाते रहते है एवं डंठल (पेटीओल्स) की सतह पर विशिष्ट गहरे, वी-आकार के निशान दिखाई देते हैं। घौद में जब केला पूरी तरह से विकसित हो जाती हैं तो थ्रिप्स के लक्षण जंग के रूप में दिखाई देते हैं। थ्रीप्स पत्तियों पर, फूलों पर एवं फलों पर नुकसान पहुंचाते है ,पत्तियों का थ्रिप्स (हेलियनोथ्रिप्स कडालीफिलस) के खाने की वजह से पहले पीले धब्बे बनते है जो बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं और इस कीट की गंभीर अवस्था में प्रभावित पत्तियां सूख जाती हैं।

इस कीट के वयस्क फलों में अंडे देते है एवं इस कीट के निम्फ फलों को खाते हैं। अंडा देने के निशान और खाने के धब्बे जंग लगे धब्बों में विकसित हो जाते हैं जिससे फल टूट जाते हैं। गर्मी के दिनों में इसका प्रकोप अधिक होता है। जंग के लक्षण पूर्ण विकसित गुच्छों में दिखाई देते हैं। पूवन, मोन्थन, सबा, ने पूवन और रस्थली (मालभोग)जैसे केलो में इसकी वजह से खेती बुरी तरह प्रभावित होता हैं। फूल के थ्रिप्स (थ्रिप्स हवाईयन्सिस) वयस्क और निम्फ केला के पौधे में फूल निकलने से पहले फूलों के कोमल हिस्सों और फलों पर भोजन करती हैं और यह फूल खिलने के दो सप्ताह तक भी बनी रहती है। वयस्क और निम्फल अवस्था में चूसने से फलों पर काले धब्बे बन जाते हैं,जिसकी वजह से बाजार मूल्य बहुत ही कम मिलता है,जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

पहचान

केला में लगने वाला थ्रिप्स बेहद छोटे कीड़े होते हैं, जिनकी लंबाई आमतौर पर लगभग 1-2 मिमी होती है। उनके शरीर पतले, लम्बे होते हैं और आमतौर पर पीले या हल्के भूरे रंग के होते हैं। उनके पंखों पर लंबे बाल होते हैं, जो उन्हें एक विशिष्ट रूप देते हैं। केले के थ्रिप्स की पहचान करना उनके आकार के कारण चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन केले के पौधे की पत्तियों और फलों की बारीकी से जांच करने से उनकी उपस्थिति का पता चल सकता है।

जीवन चक्र

प्रभावी प्रबंधन के लिए केले के थ्रिप्स के जीवन चक्र को समझना आवश्यक है। ये कीड़े एक साधारण कायापलट से गुजरते हैं, जिसमें अंडा, लार्वा, प्यूपा और वयस्क चरण शामिल होते हैं।

अंडे देने की अवस्था: मादा थ्रिप्स अपने अंडे केले के पत्तों, कलियों या फलों के मुलायम ऊतकों में देती हैं। अंडों को अक्सर एक विशेष ओविपोसिटर का उपयोग करके पौधों के ऊतकों में डाला जाता है।

लार्वा चरण: एक बार अंडे सेने के बाद, लार्वा पौधे के ऊतकों को खाते हैं, जिससे नुकसान होता है। वे छोटे और पारभासी होते हैं, जिससे उन्हें पहचानना मुश्किल हो जाता है।

प्यूपा अवस्था: प्यूपा अवस्था एक गैर-आहार अवस्था है जिसके दौरान थ्रिप्स वयस्कों में विकसित होते हैं।

वयस्क अवस्था: वयस्क थ्रिप्स प्यूपा से निकलते हैं और उड़ने में सक्षम होते हैं। वे कोशिकाओं को छेदकर और रस निकालकर पौधे के ऊतकों को खाते हैं, जिससे पत्तियाँ विकृत हो जाती हैं और फलों पर निशान पड़ जाते हैं।

केले के थ्रिप्स से होने वाली क्षति

केले के थ्रिप्स विभिन्न विकास चरणों में केले के पौधों को महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचा सकते हैं जैसे...

भोजन से होने वाली क्षति: थ्रिप्स पौधों की कोशिकाओं को छेदकर और उनकी सामग्री को चूसकर खाते हैं। इस भोजन के कारण पत्तियाँ विकृत हो जाती हैं, जिनमें चांदी जैसी धारियाँ और नेक्रोटिक धब्बे होते हैं। इससे फलों पर दाग पड़ सकते हैं, जिससे वे बिक्री के लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं।

वायरस के वेक्टर: केले के थ्रिप्स, बनाना स्ट्रीक वायरस और बनाना मोज़ेक वायरस जैसे पौधों के वायरस को प्रसारित कर सकते हैं, जो केले की फसलों पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकते हैं।

प्रकाश संश्लेषण में कमी: व्यापक थ्रिप्स खिलाने से पौधे की प्रकाश संश्लेषण की क्षमता कम हो सकती है, जिससे विकास और उपज कम हो सकती है।
केला की खेती में थ्रीप्स को कैसे करें प्रबंधित ?

केला की खेती के लिए सदैव प्रमाणित स्रोतों से ही स्वस्थ रोपण सामग्री लें ।मुख्य केले के पौधे के आस पास उग रहे सकर्स को हटा दें। परित्यक्त वृक्षारोपण क्षेत्रों को हटा दें क्योंकि ये कीट फैलने के स्रोत के रूप में काम करते हैं। इसके अतरिक्त निम्नलिखित उपाय करने चाहिए

विभिन्न कृषि कार्य
छंटाई: थ्रिप्स की आबादी को कम करने के लिए नियमित रूप से संक्रमित पत्तियों और पौधों के अवशेषों की कटाई छंटाई करें और हटा दें।
बंच को ढके: थ्रिप्स के संक्रमण को रोकने के लिए विकसित हो रहे गुच्छे पॉलीप्रोपाइलीन से ढक दें ।

उचित सिंचाई: जल-तनाव वाले पौधों से बचने के लिए लगातार और उचित सिंचाई बनाए रखें, जो थ्रिप्स क्षति के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।
स्वच्छ रोपण सामग्री: सुनिश्चित करें कि रोपण सामग्री थ्रिप्स और अन्य कीटों से मुक्त हो।

जैविक नियंत्रण
शिकारी और परजीवी: थ्रिप्स कीट की आबादी को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए, शिकारी घुन और परजीवी ततैया जैसे थ्रिप्स के प्राकृतिक दुश्मनों के विकास को बढ़ावा दें। मिट्टी में थ्रिप्स प्यूपा को मारने के लिए, ब्यूवेरिया बेसियाना 1 मिली प्रति लीटर का तरल का छिड़काव करें।

रासायनिक नियंत्रण

कीटनाशक: थ्रिप्स संक्रमण के प्रबंधन के लिए नियोनिकोटिनोइड्स और पाइरेथ्रोइड्स सहित कीटनाशकों का उपयोग किया जा सकता है। हालाँकि, अति प्रयोग से प्रतिरोध हो सकता है और गैर-लक्षित जीवों को नुकसान पहुँच सकता है। थ्रीप्स के प्रबंधन के लिए छिड़काव फूल निकलने के एक पखवाड़े के भीतर किया जाना चाहिए। जब फूल सीधी स्थिति में हो तो 2 मिली प्रति लीटर पानी में इमिडाक्लोप्रिड के साथ फूल के डंठल में इंजेक्शन भी प्रभावी होता है। केला के बंच(गुच्छों),आभासी तना और सकर्स को क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी, 2.5 मिली प्रति लीटर का छिड़काव करना चाहिए।

निगरानी और शीघ्र पता लगाना
थ्रिप्स संक्रमण के लक्षणों के लिए केले के पौधों की नियमित निगरानी करें। शीघ्र पता लगाने से समय पर हस्तक्षेप करने से कीट आसानी से प्रबंधित हो जाता है।

कीट प्रतिरोधी प्रजातियों का चयन
केले की कुछ किस्मों में थ्रिप्स संक्रमण की संभावना कम होती है। प्रतिरोधी किस्मों का चयन एक प्रभावी दीर्घकालिक रणनीति हो सकती है।

फसल चक्र
थ्रिप्स के जीवन चक्र को बाधित करने और उनकी संख्या कम करने के लिए केले की फसल को गैर-मेजबान पौधों के साथ बदलें।

जाल फसलें
जाल वाली फसलें लगाएं जो थ्रिप्स को मुख्य फसल से दूर आकर्षित करती हैं और जिनका कीटनाशकों से उपचार किया जा सकता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)
एक समग्र दृष्टिकोण अपनाएं जो पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए केले के थ्रिप्स के प्रबंधन के लिए विभिन्न रणनीतियों को जोड़ती है।

अंततः कह सकते है की केले की खेती के लिए केले के थ्रिप्स एक महत्वपूर्ण खतरा हैं, जो भोजन के माध्यम से और हानिकारक वायरस के संचरण दोनों के माध्यम से सीधे नुकसान पहुंचाते हैं। प्रभावी प्रबंधन के लिए सावधानीपूर्वक निगरानी और शीघ्र हस्तक्षेप के साथ-साथ कृषि, जैविक और रासायनिक नियंत्रण उपायों के संयोजन की आवश्यकता होती है। केले की फसल के स्वास्थ्य को संरक्षित करते हुए थ्रिप्स क्षति को कम करने के लिए आईपीएम जैसी स्थायी प्रथाएं आवश्यक हैं।

श्री राम
फर्टीलाइजर्स एवं कृषि उद्योग

One-stop solutions for improving the crop and soil texture.

फूल

फॉक्सग्लोव फूल की खासियत

जानें फॉक्सग्लोव फूल की खासियत और इसके नुकसान के बारे में

फॉक्सग्लोव फूल जितना सुंदर नजर आता है, उससे कई गुना ज्यादा यह खतरनाक भी है। दरअसल, कोई भी इसका सेवन करता है, तो उसको अचानक से कभी भी हार्ट अटैक (HEART ATTACK) आ सकता है। क्योंकि, इसके अंतर्गत कार्डियक ग्लाइकोसाइड्स नामक शक्तिशाली कंपाउंड होता है।

फूल की खूबसूरती एवं उसकी सुगंध हर किसी को अपनी तरफ आकर्षित करती है, जिसकी वजह से बाजार में इसकी मांग काफी ज्यादा होती है। हमारे भारत में ऐसे विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती की जाती है, जो नजर आने में अत्यंत ज्यादा सुंदर होते हैं। परंतु उसके बने उत्पाद काफी ज्यादा खतरनाक होते हैं। ऐसे ही एक फूल के विषय में आज हम आपको जानकारी देने जा रहे हैं, जो दिखने में बेहद ही ज्यादा सुंदर है। परंतु, यह जितना सुंदर है, उतना ही हानिकारक भी है। दरअसल, हम जिस फूल की बात कर रहे हैं, उसका फूल का नाम फॉक्सग्लोव (FOXGLOVE) है। इस फूल पर जब वैज्ञानिकों ने शोध किया तो देखा गया कि इस फूल से निर्मित उत्पादों का सेवन करने से हार्ट अटैक का संकट बढ़ जाता है। क्योंकि, इस फूल के अंदर कार्डियक ग्लाइकोसाइड्स नाम का पावरफुल कंपाउंड उपस्थित होता है। बतादें, कि फॉक्सग्लोव फूल का सबसे ज्यादा इस्तेमाल हर्बल चिकित्सा (HERBAL MEDICINE) में किया जाता है।

फॉक्सग्लोव फूल के अंदर विष विघमान होता

मीडिया खबरों के अनुसार, फॉक्सग्लोव फूल में कार्डियक ग्लाइकोसाइड्स नाम का काफी शक्तिशाली कंपाउंड पाया जाता है। जोकि हमारे शरीर के लिए विष के समान है। इस फूल की वजह से व्यक्ति को अचानक से हार्ट अटैक भी आ सकता है। ऐसा कहा जा रहा है, कि इस फूल से वेंट्रिकुलर फाइब्रिलेशन जैसी परिस्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

यह फूल कब काम आता है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस फूल की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि यह उस समय उपयोग किया जाता है, जब समस्त प्रकार की औषधियां काम करना बंद कर देती हैं। ऐसी स्थिति में इस फूल के पौधे से बनी दवा का सेवन कराया जाता है, ताकि वह बच सकें। बतादें, कि शोध में पाया गया है, कि यह फूल हार्ट की मांसपेशियों पर सीधे कार्य करता है। किसी आदमी का हृदय कार्य करना बंद कर देता है, तो ऐसे में फॉक्सग्लोव फूल संजीवनी का भी कार्य करता है। यह मानव के संपूर्ण शरीर में ब्लड पंप करता है।

किस वजह से ना करें फॉक्सग्लोव फूल का सेवन

बतादें, कि हार्ट फेलियर रोगियों के लिए तो यह फॉक्सग्लोव फूल बेहद सहायक है। लेकिन, उधर यदि अन्य कोई व्यक्ति गलती से भी इस फूल के पौधे को अपने मुंह में रख लेता है, तो उसे तुरंत अपने आसपास के चिकित्सक को दिखाना चाहिए। अन्यथा वो इस जहरीले पौधे से अपनी जान तक को गवा सकता है। इसका सेवन करने से व्यक्ति को उल्टी, चक्कर आना, मतली, त्वचा में जलन, सिरदर्द, दस्त, धुंधलापन दिखना पेशाब से जुड़ी दिक्कत परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

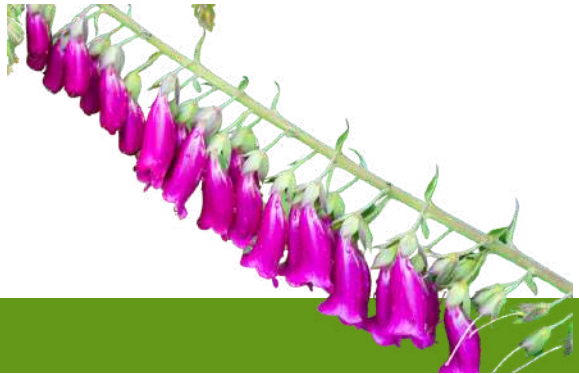

सदाबहार पौधे से संबंधित विस्तृत जानकारी

सदाबहार एक तरह का पौधा है, जो साल भर फूलता रहता है, इसलिए इसे सदाबहार के नाम से जाना जाता है। यह एक बारहमासी पौधा है, जो 3 से 4 फीट तक का होता है। सदाबहार का वैज्ञानिक नाम कैथेरेंथस रोसस है। यह एपोसाइनेसी परिवार का पौधा है। सदाबहार की उत्पत्ति मैडागास्कर से हुई है। परंतु, यह वर्तमान में विश्व भर के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय इलाकों में पाया जाता है। सदाबहार के फूलों का इस्तेमाल औषधीय उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है। सदाबहार के फूलों में एल्कलॉइड होते हैं, जो कई बीमारियों के इलाज में काफी मददगार होते हैं। सदाबहार के फूलों का इस्तेमाल कैंसर, मलेरिया और मधुमेह यानी डायबिटीज के उपचार के लिए किया जाता है।

सदाबहार पौधे से जुड़ी कुछ खास बातें

सदाबहार एक तरह का पौधा है, जो पूरे वर्ष फूलता रहता है। इसलिए इसे सदाबहार कहा जाता है, यह एक बारहमासी पौधा है, जो 3 से 4 फीट तक का होता है। इसके फूल गुलाबी, सफेद अथवा लाल रंग के होते हैं। साथ ही, इनके अंदर पांच पंखुड़ियां होती हैं। सदाबहार के फूलों का इस्तेमाल औषधीय उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है। सदाबहार का वैज्ञानिक नाम कैथेरेंथस रोसस है। यह एपोसाइनेसी परिवार का पौधा है। सदाबहार एक लोकप्रिय पौधा होता है, जिसे सामान्यतः घरों और बगीचों में उगाया जाता है। यह एक कम रखरखाव वाला पौधा होता है, जो सूखे और छाया में अच्छी तरह से जीवित रह सकता है। इस छोटे से दिखने वाले पौधे के अंदर बहुत सारे औषधीय गुण उपलब्ध हैं। जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक हैं।

सदाबहार के पौधों को इस प्रकार लगाऐं

सामान्य तौर पर तो सदाबहार का पौधा स्वयं से ही जहां-तहां निकल आता है। इसे लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। परंतु, हां यदि आप ये चाहते हैं, कि इसके रंग-बिरंगें फूलों का आनंद लिया जाए तो आप इसे कई गमलों में लगा सकते हैं। उसके लिए एक गमले में सूखी मिट्टी को रख लें और उसमें थोड़ा पानी डाल कर उसमें पौधरोपण करें। सदाबहार के पौधे को नियमित तौर पर पानी दें। परंतु, मिट्टी को भिगोने से बचें, सदाबहार के पौधे को प्रति वर्ष वसंत में खाद दें। सदाबहार के फूलों का इस्तेमाल औषधीय उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है। सदाबहार के फूलों में एल्कलॉइड होते हैं, जो बहुत सारी बीमारियों के उपचार में उपयोगी होते हैं। सदाबहार के फूलों का इस्तेमाल मलेरिया, डायबिटीज और कैंसर के इलाज के लिए किया जाता है।

सदाबहार का उपयोग करने से पहले डॉक्टर से सलाह जरूर लें

सदाबहार के फूलों का उपयोग डायबिटीज, कैंसर और मलेरिया के इलाज के लिए किया जाता है। सदाबहार कैंसर, मलेरिया जैसी बीमारी में सहयोगी होने के साथ-साथ ये मधुमेह के उपचार में भी सहायता करता है। सदाबहार के फूलों में इंसुलिन के उत्पादन को बढ़ाने के गुण विघमान होते हैं। हालांकि, सदाबहार के फूलों का इस्तेमाल करने से पूर्व डॉक्टर से सलाह लेनी बेहद आवश्यक है। सदाबहार के फूलों में कुछ दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं, जैसे कि उल्टी, दस्त और सिरदर्द इस लिए इसका इस्तेमाल करने से पूर्व डॉक्टर की सलाह जरूर लेनी चाहिए।

मशीनरी

किसान भाइयों को डीजल के खर्च और प्रदूषण की मार से बचाऐगा ये ई-ट्रैक्टर

किसानों का दोस्त माने जाने वाला ट्रैक्टर भी अब अपने किसान मित्रों को डीजल के खर्च की मार से बचाने के लिए इलेक्ट्रिक बैटरी से चलेगा। जी हाँ, आज हम आपको जानकारी देंगे इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड (ITPL) के इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर ITPL E-TRACTORS के विषय में।

भारत में इलेक्ट्रिक स्कूटी से लगाकर कार एवं बसों को भी सरकार निरंतर बैटरी चालित करने की कोशिश कर रही है। इसकी मुख्य वजह तेल के प्राकृतिक सीमित संसाधनों के दोहन में गिरावट लाना है। साथ ही, भारत में ऊर्जा के नवीन आयामों को स्थापित करना भी है। बतादें, कि कृषि क्षेत्र में भी इस प्रकार के बहुत से नवीन कृषि यंत्रों का विकास हो चुका है, जिनमें कृषि ड्रोन, ग्रास कटर इत्यादि शम्मिलित हैं। परंतु, कृषि तकनीक के विकास के साथ ही फिलहाल किसानों का दोस्त कहा जाने वाला ट्रैक्टर भी फिलहाल डीजल की जगह इलेक्ट्रिक बैटरी के माध्यम से चलेगा।

दरअसल, हम इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड (ITPL) के इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर ITPL E-TRACTORS के बारे में बात कर रहे हैं। कंपनी ने यह ट्रैक्टर 2023 में ही लॉन्च किया है। आगे हम आपको इस लेख में ट्रैक्टर की कीमत एवं विशेषताओं के विषय में जानकारी देंगे।

ITPL E-TRACTORS की कुछ मुख्य विशेषताऐं

ITPL E-TRACTORS की खासियतों की बात करें तो इसकी अधिकतम गति 30 किलोमीटर/घंटे है। यह ट्रैक्टर एक बार की चार्जिंग में लगभग 100 किलोमीटर तक चलता है। इसके अंदर 35 हॉर्स पॉवर का आउटपुट होता है। यह 300 NM का टार्क जनित कर सकता है।

ITPL E-TRACTORS कितने रुपए में आता है

इस ट्रैक्टर को किसानों की सुविधा के अनुरूप तैयार गया है। यह खेतों से लगाकर किसानों के विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक कार्यों को सुगमता से कर सकने में समर्थ हैं। साथ ही, इसकी कीमत की बात की जाए तो यह बाजार में 3 से 5 लाख के मध्य निर्धारित की गई है। यह किसानों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से छुटकारा भी दिलाएगा। साथ ही, इसके मेंटिनेंस यानी कि रखरखाव में भी किसानों का काफी कम खर्चा आएगा।

ITPL E-TRACTORS के कितने फायदे हैं

- डीजल की अंधांधुंध खपत व खर्च से छुटकारा
- खर्चा कम और काम ज्यादा
- प्रदूषण से पूर्णतय मुक्ति
- बेहद ही कम मेंटिनेंस का खर्चा
- घरेलु एवं व्यावसायिक कार्यों में सहायक

भविष्य में यह ट्रैक्टर मील का पत्थर साबित होगा

नई बुलंदियों को छूने वाली कृषि क्षेत्र की दृष्टि से यह ट्रैक्टर वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी बेहद काम आने वाला है। भारत सहित विश्व भर में प्राकृतिक तौर पर मिलने वाले पेट्रोल, डीजल की अपेक्षा यही ट्रैक्टर्स ले लेंगे। इसकी वजह यह है, कि यह विद्युत चालित होते हैं। इनके कम मेंटिनेंस के खर्च एवं चलने में सहजता की वजह से यह किसानों की प्रथम पसंद भी बना हुआ है।

E-TRACTORS को प्रोत्साहन देने के लिए अनुदान भी दिया जाता है

वर्तमान में बहुत-सारी राज्य सरकारें भी E-TRACTORS की खरीद के लिए अनुदान धनराशि उपलब्ध करा रही हैं। आपको इसके लिए अपने समीपवर्ती कृषि विज्ञान केंद्र अथवा अन्य सरकारी कृषि विभाग से जानकारी को इकठ्ठा करने के उपरांत ही खरीदना चाहिए।

किसान भाई इन दो कृषि उपकरणों से कुछ ही घंटे में गेंहू की फसल काट सकते हैं

रबी की फसलों के अंतर्गत गेहूं खाद्यान्न की प्रमुख फसल के तौर पर किसानों द्वारा चुनी जाने वाली प्रमुख फसल है। हम आज आपको इस फसल की कटाई से संबंधित दो कृषि यंत्रों के बारे में जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं, जिनके माध्यम से आप कई एकड़ फसल को कुछ ही घंटों के अंदर काट सकते हैं।

किसान और सरकार चाहते हैं, कि भारतभर में फसलों का उत्पादन और उनकी गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी हो। क्योंकि, इससे कृषक एवं सरकार दोनों को फायदा होगा। लेकिन यह सिर्फ तब ही संभव हो पाएगा, जब फसल उत्पादन का काम कम लागत में संपन्न हो। इसका एक मात्र विकल्प यह है, कि आधुनिक कृषि यंत्रों का इस्तेमाल किया जाए, जिससे कि समय, श्रम एवं लागत की बचत हो पाए। इससे किसानों को अच्छा मुनाफा भी हांसिल हो सकेगा। ऐसे में आज हम ऐसे आधुनिक 2 कृषि यंत्रों के विषय में बताएंगे, जो कि गेहूं की कटाई को काफी सुगम बना देते हैं।

ट्रैक्टर चलित रीपर बाइंडर

आपकी जानकरी के लिए बतादें, कि इस मशीन के द्वारा कटर बार से पौधे कटे जाते हैं, उसके बाद पुलों में बंध जाते हैं। इसके पश्चात संचरण प्रणाली द्वारा एक ओर गिरा दिया जाता है। मुख्य बात यह है, कि इस मशीन की सहायता से कटाई और बंधाई का काम बेहद ही सफाई से होता है।

कार्यक्षमता: इससे तकरीबन 0.40 हेक्टेयर/घंटा की दर से कटाई कर सकते हैं। इससे कटाई की लागत लगभग 1050/- रुपए घंटा आती है।

कीमत: इस मशीन का अनुमानित मूल्य तकरीबन 2 से 3 लाख रुपए के आस-पास होता है।

स्वचालित वर्टिकल कन्वेयर रीपर

किसान भाइयों आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि छोटे और मध्यम किसानों के लिए गेहूं की कटाई करने हेतु यह अत्यंत उपयोगी मशीन है। इस मशीन में आगे की तरफ एक कट्टर बार लगी होती है, तो वहीं पीछे संचरण प्रणाली लगी होती है। इसके साथ ही रीपर में तकरीबन 5 हॉर्स पावर का एक डीजल इंजन लगा होता है, जो कि पहियों और कटर बार के लिए चलाने का कार्य करता है।

कीमत: इस मशीन की अनुमानित लागत रुपए लगभग 100000/- है।

कार्यक्षमता: इस मशीन से कटाई करने की लागत लगभग 1100 रुपए प्रति हेक्टेयर आती है. इसकी कार्य क्षमता लगभग 0.21 हेक्टेयर प्रति घंटा है।

इन कृषि यंत्रों को खरीदने के लिए आप अपने क्षेत्र में स्थानीय कंपनियों से संपर्क कर सकते हैं, जो कि कृषि यंत्रों का निर्माण करती हैं। बतादें, कि यह कृषि यंत्र आपको बहुत ही कम कीमत में मिल जाएंगे।

सोनालिका ट्रैक्टर्स की नई सीरीज लॉन्च

ITL ने सोनालिका ट्रैक्टर्स की नई सीरीज लॉन्च कर दी है

बतादें, कि रोमांचक लॉन्च के दौरान आईटीएल के कार्यकारी निदेशक, श्री राहुल मित्तल ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा, कि "हमने भारतीय विनिर्माण लागत पर यूरोपीय स्टाइल और जापानी गुणवत्ता को मिलाकर एक जीत का सूत्र खोज लिया है। इस फॉर्मूले में विशेष घटक चैनल हिस्सेदारों के सबसे बड़े नेटवर्क के साथ हमारी लगातार विकास मानसिकता है। दरअसल, बड़े सपने देखने वाले नई चुनौतियों का सामना करने के इच्छुक हैं और नए आविष्कार के लिए तैयार हैं। यह फॉर्मूला वैश्विक ट्रैक्टर उद्योग को हिला रहा है। हमारा उद्देश्य दुनिया भर के किसानों को उनकी उत्पादकता बढ़ाने और उनके जीवन में बदलाव लाने में मदद करना है। हमारा लक्ष्य नवाचार के माध्यम से इसे हासिल करना है।"

आईटीएल में इंटरनेशनल बिजनेस के निदेशक और सीईओ श्री गौरव सक्सेना ने कहा, "इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड में, हम कृषि समुदाय के प्रति एक वैश्विक प्रतिबद्धता में विश्वास करते हैं, जो सीमाओं से परे हैं और वास्तव में हमारे ग्राहकों की समृद्धि को महत्व देता है। हमारी नई उत्पाद पेशकशें खेती के भविष्य को आकार देने के लिए डिजाइन की गई हैं और हम नियमित रूप से नए ट्रैक्टर पेश करते रहते हैं या बाजार की प्रतिक्रिया के आधार पर अपने उत्पाद पोर्टफोलियो को अपग्रेड करते रहते हैं। हम पिछले 4 वर्षों से भारत से नंबर 1 निर्यात ब्रांड रहे हैं और एड्रेसेबल सेगमेंट में 14 देशों में नंबर 1 स्थान पर हैं। ये नई पांच ट्रैक्टर श्रृंखलाएं हमें विश्व बाजारों में अपनी स्थिति मजबूत करने, ग्राहकों की एक विस्तृत श्रृंखला की सेवा करने के साथ-साथ 3000 से ज्यादा डीलरों के हमारे सबसे बड़े नेटवर्क के समर्थन के साथ विभिन्न बाजारों में नए क्षेत्रों में प्रवेश करने में सक्षम बनाएंगी।

इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड फ्रांस, फिनलैंड, चेक गणराज्य, नेपाल, म्यांमार, अल्जीरिया, हंगरी, पुर्तगाल, आइसलैंड, जर्मनी और एड्रेसेबल सेगमेंट में बहुत से बाकी देशों सहित 15+ देशों में नंबर 1 है। यह एक अग्रणी भारतीय कंपनी है, जो दुनिया के 150 से ज्यादा देशों में 16-125 एचपी सेगमेंट में उन्नत तकनीक से लैस ट्रैक्टर निर्यात करती है। कंपनी ने विगत कुछ वर्षों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी की है और वित्त वर्ष 2023 में इसकी बाजार में भागीदारी 28% थी, जो वित्त वर्ष 2024 की पहली छमाही में बढ़कर 36% हो गई।

इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड भारत का नंबर 1 ट्रैक्टर निर्यात ब्रांड है। 1996 में निगमित, यह देश का तीसरा सबसे बड़ा ट्रैक्टर निर्माता भी है और विश्व स्तर पर शीर्ष 5 ट्रैक्टर निर्माताओं में गर्व से खड़ा है। कंपनी दो ब्रांड नामों – सोनालिका और सोलिस के तहत ट्रैक्टर बनाती है।

भारत से नंबर 1 ट्रैक्टर निर्यातक होने के नाते, आईटीएल गर्व से भारत के बाहर के बाजारों में 2.5 लाख ग्राहकों के साथ जुड़ा हुआ है, जो दुनिया भर में एक भारतीय ब्रांड की उच्च स्वीकार्यता का एक सच्चा संकेत है। यह एड्रेसेबल इंडस्ट्री में 15 से अधिक देशों में नंबर 1 ब्रांड है, जिसमें जर्मनी, फिनलैंड, पुर्तगाल, आइसलैंड, चेक गणराज्य, म्यांमार, नेपाल और बांग्लादेश जैसे विकसित और विकासशील दोनों देश शामिल हैं। कंपनी के पास वित्त वर्ष 23 में निर्यात में 28% से अधिक बाजार हिस्सेदारी थी, जो वित्त वर्ष 24 की पहली छमाही में बढ़कर 36% हो गई है, जिसका मतलब है कि भारत से निर्यात किए जाने वाला हर तीसरा ट्रैक्टर आईटीएल में तैयार किया जाता है।

आईटीएल की मौजूदगी समस्त यूरोपीय देशों में है। साथ ही, इसके ट्रैक्टर विविध यूरोपीय परिस्थितियों में हजारों से ज्यादा संतुष्ट ग्राहकों द्वारा सफलतापूर्वक संचालित किए जाते हैं। आईटीएल ने यानमार की मदद से जर्मनी में एक स्पेयर पार्ट्स सेंटर भी स्थापित किया है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि बेहतर सेवा और समग्र ग्राहक संतुष्टि प्रदान करने के मकसद से यूरोप में ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करता है।

जोश का राज़ मेरा
SWARAJ
ट्रैक्टर बोले तो
SWARAJ
POWERFUL ENGINE
STRONG FRONT AXLE
LED FENDER AND TAIL LAMP
SWARAJ 744 FE
NAYA SWARAJ, MERA SWARAJ

मौसमी व अन्य कृषि सुझाव

वैज्ञानिकों द्वारा चलाई गई इस परियोजना से किसान कम समय में चंदन की खेती से बनेंगे मालामाल

चंदन की खेती से कृषक कम लागत लगाकर करोड़ों रूपए तक कमा सकते हैं। परंतु, इसकी पैदावार के लिए 10-15 वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जिसकी वजह से देश के कुछ ही किसान चंदन की खेती करते हैं। साथ ही, केंद्रीय मृदा एवं लवणता अनुसंधान संस्थान ने कम समयांतराल में तैयार होने वाले चंदन के पौधों को विकसित कर रहा है।

चंदन का उत्पादन करने से किसान भाइयों को बेहद ही ज्यादा मुनाफा मिलता है। भारत के अधिकांश किसान इसकी खेती की ओर अपनी दिलचस्पी तो दिखाते हैं, परंतु तकनीकी अभाव के कारण वह चंदन की खेती नहीं कर पाते हैं। दरअसल, चंदन के पेड़ों से मुनाफा हांसिल करने के लिए तकरीबन 10-15 सालों तक की लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इसी कड़ी में केंद्रीय मृदा एवं लवणता अनुसंधान संस्थान ने एक पहल की है, जिसमें अच्छे और गुणवत्तापरक चंदन के पौधे विकसित किए जा रहे हैं। फिलहाल इस काम पर वैज्ञानिकों की तरफ से शोध किया जा रहा है, जिससे कि किसानों को कम समयावधि में चंदन की खेती से ज्यादा से ज्यादा फायदा अर्जित हो सके। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि चंदन का उपयोग पूजा-पाठ से लगाकर बाकी विभिन्न प्रकार के शुभ कार्यों में किया जाता है। इसकी वजह से बाजार में चंदन की मांग और कीमत दोनों ही काफी बढ़ जाती हैं।

वैज्ञानिकों की तरफ से चंदन के वृक्षों पर परियोजना जारी

कृषकों की आमदनी में बढ़ोतरी करने के लिए केंद्रीय मृदा और लवणता अनुसंधान संस्थान (सीएसएसआरआई) करनाल के वैज्ञानिकों की तरफ से चंदन के बेहतर और गुणवत्तापरक पौधों को विकसित किया जा रहा है।

इस संबंध में कृषि वैज्ञानिक डॉ. राज कुमार ने बताया है, कि चंदन के पौधों पर यह परियोजना कार्य संस्थान के निदेशक डॉ. आरके यादव के दिशा निर्देशन में किया जा रहा है। वर्तमान में भी चंदन के पौधे पर शोध बरकरार चल रहा है। उन्होंने कहा है, कि चंदन के वृक्ष से फायदा उठाने के लिए किसानों को 10-15 वर्षों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। वैज्ञानिकों के द्वारा इसी दीर्घकालीन प्रतीक्षा को कम करने के लिए यह परियोजना जारी की गई है। इसके साथ ही चंदन के वृक्ष के पास किस मेजबान पौधे को रखें एवं कितनी खाद, कितना पानी दिया जाए आदि अहम पहलुओं पर भी कार्य चल रहा है, जिससे कि चंदन के पेड़ों से फायदा पाने का समयांतराल कम हो सके। प्राप्त की गई जानकारी के अनुसार, संस्थान में एक एकड़ जमीन में चंदन के पौधे स्थापित किए गए हैं, जो कि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किए गए हैं।

किसानों के लिए चंदन का वृक्ष काफी फायदेमंद है

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार, चंदन का वृक्ष जितना पुराना होगा, बाजार में उतना ही ज्यादा उसका भाव होता है। यदि देखा जाए तो चंदन का एक पेड़ लगभग 15 वर्ष में तैयार होता है, तो बाजार में उस एक पेड़ की कीमत करीब 70 हजार रुपये से लेकर दो लाख रुपये तक हो सकती है। ऐसी स्थिति में फिलहाल आप अनुमान लगा सकते हैं, तो चंदन की खेती कर किसान कुछ ही वर्षों में लाखों की आमदनी सहजता से कर सकते हैं।

चंदन का पौधा बाकी दूसरे पौधों से खुराक लेता है

चंदन के पौधे के साथ में बाकी दूसरा पौधा भी लगाया जाता है। क्योंकि, यह वृक्ष स्वयं अपनी खुराक दूसरे पौधों की जड़ों से प्राप्त करता है।

रबी सीजन में सरसों की खेती के लिए ये पांच उन्नत किस्में काफी शानदार हैं

सरसों रबी की प्रमुख फसलों में से एक है। बतादें, कि सरसों की खेती भारत के बहुत से राज्यों में प्रमुखता से की जाती है। यदि सरसों की उन्नत किस्मों की बात की जाए तो उनमें राज विजय सरसों-2, पूसा मस्टर्ड 21, पूसा सरसों आरएच 30, पूसा बोल्ड और पूसा सरसों 28 हैं।

दरअसल, भारत के तकरीबन समस्त राज्यों में फसलों की बिजाई से लेकर कटाई तक सबकुछ मौसम पर आश्रित रहता है। जैसा की आप जानते हैं, कि खरीफ की फसलों की कटाई का समय चल रहा है। साथ ही, किसान रबी फसलों की बिजाई की तैयारी कर रहे हैं। वहीं, रबी फसल में बोई जाने वाली प्रमुख फसलों में आलू, मटर, सरसों, गेंहू आदि हैं। आज हम आपको सरसों की बेहतरीन किस्मों के संबंध में आपको जानकारी देंगे। सरसों की इन उन्नत किस्मों के नाम पूसा बोल्ड, पूसा सरसों 28, राज विजय सरसों-2, पूसा मस्टर्ड 21 और पूसा सरसों आरएच 30 हैं। यह सभी भारत में तिलहन के उत्पादन में सर्वाधिक पसंद की जाने वाली सरसों की किस्में हैं। ये किस्में किसानों प्रति हेक्टेयर कम लागत में ज्यादा मुनाफा देती हैं। इनका उत्पादन भी बाकी किस्मों की तुलना में ज्यादा होता है। तो चलिए सरसों की इन किस्मों के संबंध में विस्तार से जानते हैं।

सरसों की खेती के लिए 5 उन्नत किस्में

सरसों पूसा बोल्ड

सरसों पूसा बोल्ड की कटाई हेतु पकने की समयावधि 100 से 140 दिन होती है। इसकी बुवाई करने के लिए राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र एवं दिल्ली का क्षेत्र उपयुक्त माना जाता है। अगर हम इसकी प्रति हेक्टेयर पैदावार की बात करें तो यह 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्रदान करती है। इसके अंदर तेल की मात्रा तकरीबन 40 प्रतिशत तक होती है।

पूसा सरसों 28

फसल पकने व कटाई की समयावधि 105 से 110 दिन होती है। इसकी बुआई हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में की जाती है। किसान भाई इससे प्रति हेक्टेयर 18 से 20 क्विंटल उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। तेल की मात्रा की बात की जाए तो तकरीबन 21 प्रतिशत तक है।

राज विजय सरसों-2

फसल पकने की समयावधि 120 से 130 दिन तक की होती है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में इसका उत्पादन किया जाता है। वहीं, इससे औसत पैदावार 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है। तेल की मात्रा तकरीबन 37 से 40 प्रतिशत तक होती है।

पूसा सरसों आर एच 30

सरसों की इस किस्म की फसल को पकने में लगभग 130 से 135 दिनों का समय लगता है। इस किस्म की बुआई का इलाका हरियाणा, पंजाब एवं पश्चिमी राजस्थान होता है। वहीं, अगर हम प्रति हेक्टेयर की बात करें तो वह 16 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होता है। अगर हम इसके अंदर तेल की मात्रा की बात करें तो वह लगभग 39 प्रतिशत तक होती है।

पूसा मस्टर्ड 21

इस किस्म की फसल के पकने की समयवधि 137 से 152 दिनों के लगभग होती है। बतादें, कि पंजाब, राजस्थान और दिल्ली में प्रमुख तौर पर इसका उत्पादन किया जा सकता है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इससे प्रति हेक्टेयर 18 से 21 क्विंटल उत्पादन लिया जा सकता है। इस किस्म की सरसों से तेल की मात्रा की बात करें तो वह करीब 37 से 40 प्रतिशत तक होती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुवांशिकी संस्थान के मुताबिक इन इलाकों के किसान यदि ज्यादा उत्पादन चाहते हैं, तो सरसों की ये किस्में कृषकों के लिए मुनाफे का सौदा साबित हो सकती हैं। ये समस्त किस्में प्रति हेक्टेयर अधिक उत्पादन के साथ में अधिक प्रतिशत तेल की मात्रा पैदा करती हैं।

FIELDKING

Equipment that are Built Tough

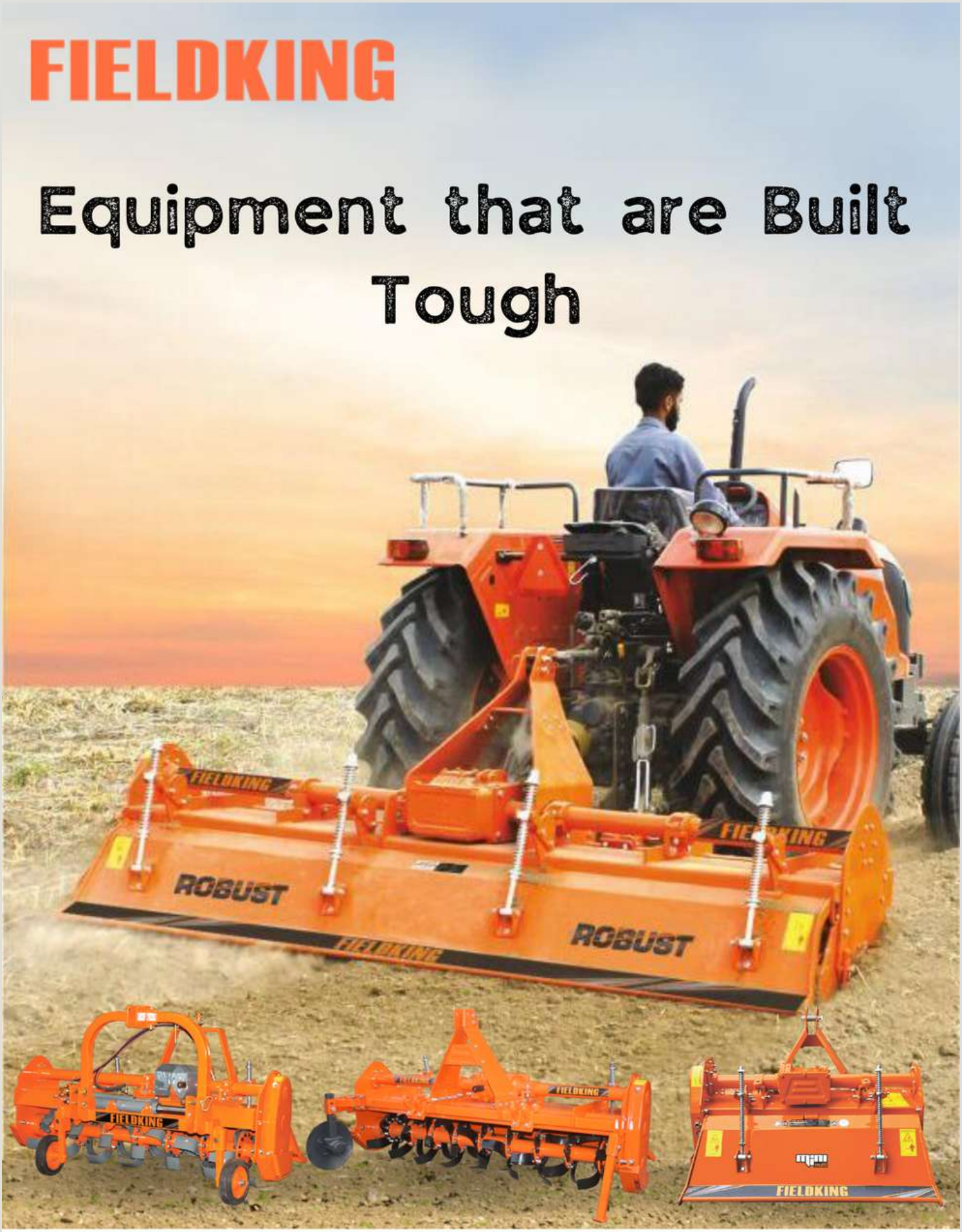

Add: Plot No.235, Sec-3, HSIIDC,
Karnal -132001 (Haryana), India

www.fieldking.com

Become a Dealer : +91 9254016570

+91 184 7156665 / 66

सामान्य लेख

जानें दुनिया की सबसे ज्यादा तीखी मिर्चों के बारे में जिनको सारी दुनिया जानती है

आज हम आपको दुनिया की सबसे तीखी चार मिर्चों के बारे में बताने जा रहा हैं, जिन्हें खा पाना बेहद मुश्किल है। इन मिर्चों ने अपना नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज कराया है।

बहुत सारे लोग तीखा खाना काफी ज्यादा पसंद करते हैं। परंतु, आज हम आपको विश्व की सबसे तीखी मिर्च के संबंध में जानकारी देने जा रहे हैं। इसका सेवन करने से अच्छे-अच्छे व्यक्ति की हालत खराब हो जाती है। चलिए जानते हैं, विश्व की चार सबसे तीखी मिर्चों के विषय में।

ड्रेगन्स ब्रेथ मिर्च के विषय में जानें

ड्रेगन्स ब्रेथ मिर्च खाने में ज्यादा तीखी होती है। यह मिर्च खाने में जितनी तीखी होती है, उतनी ही फायदेमंद भी होती है। इस मिर्च का सर्वाधिक इस्तेमाल औषधियां तैयार करने के लिए होता है। ये मिर्च यूनाइटेड किंगडम में पाई जाती है। ड्रेगन्स ब्रेथ मिर्च को दुनिया की सबसे तीखी मिर्च भी कहा जाता है। इस मिर्च का तीखापन 2.48 मिलियन स्कॉविल इकाई तक होता है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि सबसे तीखी माने जाने वाली कैरोलिना पेपर्स से भी लगभग 2.2 मिलियन ज्यादा है।

नागा वाइपर मिर्च

नागा वाईपर मिर्च खाने में बेहद अधिक तीखी होती है। बतादें कि इसका उत्पादन सिर्फ यूनाइटेड किंगडम में की जाती है। इस मिर्च का रंग अलग भी हो सकता है, जरूरी नहीं है, कि अन्य मिर्च की भांति ही इसका रंग भी लाल ही हो।

भूत झोलकिया मिर्च

बतादें, कि मिर्च को भारत की सबसे तीखी मिर्च माना जाता है। इसका नार्थ-ईस्ट में उत्पादन किया जाता है। इसको साल 2007 में विश्व की सबसे तीखी मिर्ची कहा गया था। इस मिर्च का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी शामिल किया गया है। भूत झोलकिया खाने में इतनी तीखी होती है, कि इसे घोस्ट पेपर के नाम से भी जाना जाता है। इस मिर्च की खेती मणिपुर, असम और अरुणाचल प्रदेश में होती है।

कैरोलिना रीपर मिर्च के बारे में जानें

कैरोलिना रीपर भी काफी ज्यादा तीखी मिर्च होती है। इसे वर्ष 2013 में तीखेपन के संबंध में गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स बुक में शामिल किया गया था। इसका उत्पादन मुख्यतः अमेरिका में किया जाता है। इस मिर्च को स्वीट हैबनेरो एवं नागा वाइपर मिर्च के मध्य क्रॉस करके तैयार किया जाता है। बहुत सारे मामलों में तो कैरोलिना रीपर मिर्च खाना काफी ज्यादा हानिकारक भी साबित हो सकता है।

दिवाली से पहले ही गेहूं की कीमतों में रिकॉर्ड इजाफा दर्ज किया गया

दिवाली से आने से पूर्व पुनः एक बार फिर से गेहूं महंगा हो चुका है। बतादें, कि इससे राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में गेहूं की कीमत थोक बाजार में 27,390 रुपये प्रति मीट्रिक टन तक पहुंच चुकी है। ऐसा कहा जा रहा है, कि आगामी दिनों में इसका भाव और बढ़ सकता है। साथ ही, इससे पूर्व जनवरी माह में भी गेहूं की कीमत सातवें आसमान पर पहुँच गई थी।

केंद्र सरकार के बहुत सारे प्रयासों के बावजूद भी महंगाई कम ही नहीं हो पा रही है। आलम यह है, कि एक वस्तु सस्ती होती है, तो दूसरी वस्तु महंगी हो जाती है। टमाटर एवं हरी सब्जियों के भाव में गिरावट दर्ज की है। वर्तमान में गेहूं एक बार पुनः महंगा हो गया है। ऐसा बताया जा रहा है, कि त्योहारी सीजन से पूर्व ही गेहूं के भाव 8 माह के अपने सबसे उच्चतम स्तर पर पहुंच चुकी है। ऐसी स्थिति में फूड इन्फ्लेशन बढ़ने की संभावना एक बार पुनः बढ़ गई है। साथ ही, व्यापारियों ने बताया है, कि इंपोर्ट ड्यूटी के कारण विदेशों से खाद्य पदार्थों का आयात प्रभावित हो रहा है। इससे सरकार के ऊपर निर्यात ड्यूटी हटाने को लेकर काफी दबाव बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार को महंगाई पर लगाम लगाने के लिए समय-समय पर सरकारी भंडार से भी गेहूं और चावल जैसे खाद्य पदार्थ को जारी करना पड़ रहा है।

गेंहू की कीमत बढ़ने से इन खाद्यान पदार्थों की कीमत भी बढ़ेगी

कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक, त्योहारी दिनों की वजह से बाजार में गेहूं की डिमांड बढ़ गई है। वहीं, मांग में बढ़ोतरी से गेहूं की आपूर्ति काफी प्रभावित हो गई है, जिससे कीमतें 8 माह के अपने सबसे उच्चतम स्तर पर पहुंच चुकी हैं। यदि कीमतों में इजाफे का यह हाल रहा तो, आगामी दिनों में खुदरा महंगाई और भी बढ़ सकती है। गेहूं एक ऐसा अनाज है, जिससे विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ तैयार किए जाते हैं। अगर गेहूं की कीमत में बढ़ोतरी होती है, तो रोटी, बिस्कुट, ब्रेड एवं केक समेत विभिन्न खाद्य पदार्थ काफी महंगे हो जाएंगे।

भारत सरकार द्वारा गेहूं पर 40% फीसद इंपोर्ट ड्यटी

मुख्य बात यह है, कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में गेहूं के भाव में मंगलवार को 1.6% का इजाफा दर्ज किया गया। इससे गेहूं की कीमत थोक बाजार में 27,390 रुपये प्रति मीट्रिक टन तक पहुंच गई, जोकि 10 फरवरी के बाद का सर्वोच्च स्तर है। ऐसा बताया जा रहा है, कि विगत छह महीनों के दौरान गेहूं का भाव तकरीबन 22% प्रतिशत बढ़ा हैं। साथ ही, रोलर फ्लोर मिलर्स फेडरेशन के अध्यक्ष प्रमोद कुमार एस ने केंद्र सरकार के समक्ष गेहूं के आयात पर से ड्यूटी हटाने की मांग उठाई है। दरअसल, उन्होंने बताया है, कि अगर सरकार गेहूं पर से इंपोर्ट ड्यटी हटा देती है, तो निश्चित रूप से इसकी कीमत कम हो सकती है। दरअसल, भारत सरकार द्वारा गेहूं पर 40% फीसद आयात ड्यूटी लगाई है, जिसे हटाने को लेकर कोई तत्काल योजना नजर नहीं आ रही है।

खाद्य पदार्थों की कीमतों में इस तरह गिरावट होगी

साथ ही, 1 अक्टूबर तक सरकारी गेहूं भंडार में केवल 24 मिलियन मीट्रिक टन ही गेहूं का भंडार था। जो पांच वर्ष के औसतन 37.6 मिलियन टन के मुकाबले में बेहद कम है। हालांकि, केंद्र ने फसल सीजन 2023 में किसानों से 26.2 मिलियन टन गेहूं की खरीदारी की है, जो लक्ष्य 34.15 मिलियन टन से कम है। वहीं, केंद्र सरकार का अंदाजा है, कि फसल सीजन 2023-24 में गेहूं उत्पादन 112.74 मिलियन मीट्रिक टन के करीब होगा। इससे खाद्य पदार्थों के भाव में गिरावट आएगी।

यूके के वैज्ञानिकों ने गेंहू की RHT13 किस्म विकसित की

यूके के वैज्ञानिकों ने गेंहू की एक खास किस्म पर शोध कर के उसका नाम RHT13 दिया है। गेंहू की इस किस्म से कम नमी वाली भूमि अथवा सूखी भूमि पर भी बंपर उत्पादन मिलता है।

खेती करने में सबसे ज्यादा दिक्कत सूखाड़ जमीन में होती है। अच्छी वर्षा नहीं होने से किसानों के चेहरे पर मायूसी के बादल छा जाते हैं। अगर बारिश अच्छी नहीं हुई तो किसानों की उम्मीद निराशा में बदल जाती है। अब ऐसी स्थिति में यूके के वैज्ञानिकों ने शोध कर के गेंहू की एक नवीन किस्म को तैयार किया है। गेहूं की इस किस्म की सूखी जमीन पर भी खेती कर बंपर उत्पादन हांसिल किया जा सकता है। वहीं, वैज्ञानिकों ने गेंहू के इस प्रजाति को RHT13 नाम दिया है। गेंहू की ये किस्म कम नमी वाली भूमि अथवा सूखी भूमि पर भी बेहतरीन उत्पादन देगा।

RHT13 फसल की लंबाई पारंपरिक गेंहू की तुलना में कम होगी। इस फसल से किसानों को बेहद लाभ मिलेगा। सबसे प्रमुख बात यह है, कि इसकी कम पानी वाले क्षेत्र में भी बेहतरीन पैदावार होगी।

RHT13 गेंहू की प्रमुख विशेषताएं

RHT13 गेंहू की बुवाई जमीन के बेहद अंदर तक की जाती है। ये एक बेहतरीन उत्पादन देने वाली प्रजाति है। इसमें विभिन्न तरह की मृदा एवं जलवायु में अच्छी तरह से बढ़ सकने की शक्ति है। RHT13 गेहूं में एक जीन होता है, जिसे RHT13 के नाम से जाना जाता है। यह जीन पौधे को ज्यादा शाखाओं और ज्यादा दाने उत्पादित करने में सहयोग करता है। RHT13 जीन की वजह, RHT13 गेंहू पारंपरिक किस्मों की तुलना में अधिक उत्पादन देता है।

Rht13 किस्म के गेंहू से किसानों को क्या क्या लाभ हैं

Rht13 से किसानों को फायदे ही फायदे हैं, क्योंकि Rht13 गेहूं पारंपरिक किस्मों के मुकाबले में लगभग 20 प्रतिशत ज्यादा उत्पादन देता है। सिर्फ इतना ही नहीं Rht13 गेहूं विभिन्न प्रकार की मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों में बेहतर ढ़ंग से बढ़ता है।

Rht13 किस्म तूफानी मौसम को सहन करने में भी समर्थ है

शोधकर्ताओं की मानें, तो गेंहू की किस्म Rht13 की जमीन के अंतर्गत काफी गहराई से बुवाई की जाए तो, ये किसानों को कई प्रकार से फायदा पहुंचा सकता है। इसमें तूफान को भी झेलने की क्षमता होती है। किसानों को इसकी खेती करने से कम परिश्रम में अच्छा मुनाफा मिल सकता है।

सरकारी नीतियां

योगी सरकार की इस योजना से गौ-पालन करने वालों को मिलेगा अनुदान

नंदिनी कृषक समृद्ध योजना और गौ संवर्धन योजनाओं को संचालित कर रही है। राज्य सरकार इन समस्त योजनाओं के आधार पर किसानों को अथवा डेयरी खोलने वालों को सब्सिड़ी की धनराशि के साथ में कई अन्य तरह की सहायता भी प्रदान कर रही है।

गौ पालन को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार विभिन्न प्रकार की योजनाओं को संचालित कर रही है। उत्तर प्रदेश सरकार का मुख्य उद्देश्य गौ वंश को प्रोत्साहन देने साथ-साथ राज्य में दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करना है। प्रदेश सरकार राज्य में गौ वंशों के पालन के लिए राज्य में गोपालक योजना, नंद बाबा योजना, नंदिनी कृषक समृद्ध योजना एवं गौ संवर्धन योजनाओं को संचालित कर रही है। प्रदेश सरकार इन समस्त योजनाओं के आधार पर किसानों को अथवा डेयरी खोलने वालों को सब्सिड़ी की बड़ी धनराशि के साथ में विभिन्न अन्य प्रकार की मदद भी प्रदान कर रही है। राज्य सरकार फिलहाल नंदिनी कृषक समृद्धि योजना को संचालित कर रही है। योगी सरकार की तरफ से इस योजना के अंतर्गत 62 लाख रुपये के प्रोजेक्ट पर 50 फीसद अनुदान तक तीन हिस्सों में प्रदान करेगी।

प्रमुख नस्लों की गायों पर मिलेगा अनुदान

उत्तर प्रदेश सरकार इस अनुदान धनराशि को तीन हिस्सों में प्रदान करेगी। परंतु, इसके लिए राज्य सरकार की कुछ प्रमुख शर्तें होंगी। इन शर्तों को पूर्ण करने के पश्चात ही कोई भी आदमी इस योजना का फायदा उठा सकता है। दरअसल, प्रदेश सरकार दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से अधिक दूध देने वाली गायों को पालने पर ही धनराशि को आवंटित करेगी।

इन प्रजातियों की गायों में स्वदेशी गाय थारपारकर, गिल नस्ल और साहीवाल की गायों को शम्मिलित किया गया है। इस योजना का फायदा उठाने के लिए पशुपालकों को तकरीबन 10 इन्हीं नस्लों के बच्चों को दिखाना पड़ेगा, जिसके पश्चात वह अनुदान धनराशि का तकरीबन 25 फीसद तक ले सकेंगे। इस योजना का लाभ उठाने के लिए आपको 25 अक्टूबर तक आवेदन करना पड़ेगा।

योजना का लाभ लेने के लिए किस तरह अप्लाई करें

आपको इसके लिए इसकी अधिकारिक वेबसाइट **www.animalhusb.upsdc.gov.in** पर क्लिक करके फॉर्म को भरना होगा। इसके साथ-साथ उनके पास खुद की अथवा लीज पर पशुपालन संबंधी स्थान को दिखाना आवश्यक है। इस योजना का फायदा उत्तर प्रदेश राज्य के पंजीकृत किसान ही उठा पाऐंगे। किसानों के पास गौ-पालन से जुड़ा तकरीबन तीन वर्ष का अनुभव होना चाहिए। इसके साथ-साथ कामधेनु का फायद उठा चुके लाभार्थी इसका फायदा नहीं उठा पाऐंगे।

योजना का लाभ लेने हेतु किन कागजों की आवश्यकता पड़ेगी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आपको इस योजना का फायदा उठाने के लिए राज्य सरकार द्वारा अथवा केंद्र द्वारा प्रदत्त समस्त अधिकारिक आई-डी कार्ड को अपने पास सुरक्षित रख लें, जिससे आपको आवेदन करते समय किसी भी प्रकार की कोई समस्या न हो। इसके लिए आपके पास आधार कार्ड, मूल निवास प्रमाण, जमीन का विवरण, बैंक अकाउंट विवरण, मोबाइल नंबर और पासपोर्ट साइज फोटो का होना बेहद आवश्यक है।

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

Wholly owned by Cooperatives

किसान क्रेडिट कार्ड के उपयोग से कृषक इस तरह कम ब्याज पर कृषि ऋण प्राप्त कर सकते हैं

किसान क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करके कृषक भाई-बहन कम ब्याज दर पर ऋण प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए उनको बैंक जाकर यहां दिए गए कागजात जमा करने पड़ेंगे। किसानों की सहायता के लिए सरकार ने विभिन्न योजनाएं चला रखी हैं। इन योजनाओं के सहयोग से भारत भर के लाखों कृषकों को फायदा भी मिल रहा है। कृषक भाइयों को कृषि के दौरान आर्थिक समस्याओं का सामना ना करना पड़े, इसके लिए किसान क्रेडिट कार्ड योजना चलाई जा रही है। योजना के अंतर्गत किसान भाइयों को ऋण की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि पूर्व में सिर्फ खेती करने वाले कृषकों को ही योजना के अंतर्गत फायदा दिए जाने की व्यवस्था थी। परंतु, वर्तमान में मछली पालन और पशुपालन करने वाले कृषक भाइयों को भी इस योजना के अंतर्गत फायदा दिया जा रहा है। किसान भाई फसल प्रबंधन के अतिरिक्त डेयरी के कार्यों एवं पंप सेट इत्यादि खरीदने के लिए भी ऋण ले सकते हैं। इस योजना के अंतर्गत सरकार ने ये इंतजाम किया है, कि कृषकों पर ब्याज का ज्यादा दबाव ना पड़ सके। ब्याज के बढ़ जाने के कारण खेती की लागत भी काफी बढ़ जाती है, जिसकी वजह से किसान भाई कर्जा के भार में भी फंस जाते हैं। इससे किसानों को निजात देने के लिए बैंकों के रेगुलर कर्ज से बहुत कम ब्याज केसीसी पर लिया जाता है।

कम ब्याज पर कृषि ऋण हेतु आवश्यक दस्तावेज

किसान भाइयों यदि आप कम ब्याज पर कृषि ऋण लेना चाहते हैं, तो आपके पास पहचान प्रमाण पत्र जैसे कि मतदाता पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, आधार कार्ड, पैन कार्ड आदि होना अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही जमीन के दस्तावेज और आवेदक का पासपोर्ट साइज का फोटो होना भी बेहद जरूरी होता है।

किसान भाई इस प्रकार आवेदन करें

किसान भाईयों को आवेदन करने के लिए प्रमाण पत्र, फोटो और भरा हुआ आवेदन पत्र बैंक में जमा करने पर किसान क्रेडिट कार्ड जारी होगा। आवेदन पत्र जमा करने के 15 दिन के भीतर KCC जारी हो जाएगा।

केसीसी लोन की ब्याज दर दो फीसद से लेकर औसतन 4 फीसद तक होती है

केसीसी लोन ब्याज दो प्रतिशत से आरंभ होती है। ये औसतन 4 प्रतिशत तक जाता है। ब्याज दर इस बात पर भी निर्भर करती है, कि किसान भाई केसीसी का लोन कितने समय में चुका पाते हैं। अगर किसान भाई कम वक्त में ही भुगतान करें, तो उन्हें तीन लाख रुपये तक का कर्ज बेहद ही आसान 4 प्रतिशत की दर से मिल सकता है। इसके साथ-साथ इसमें इंश्योरेंस का फायदा भी किसानों को मिलता है।

मनरेगा पशु शेड योजना और इसके लिए आवेदन से संबंधित जानकारी

मनरेगा पशु शेड योजना और इसके लिए आवेदन से संबंधित जानकारी

खेती के उपरांत पशुपालन किसानों के लिए दूसरा सबसे बड़ा कारोबार है। बहुत सारे किसान खेती के साथ पशुपालन करना बेहद पसंद करते हैं, क्योंकि खेती के साथ पशुपालन काफी मुनाफे का सौदा होता है। पशुओं के लिए ज्यादा से ज्यादा हरा और सूखा चारा खेती से ही प्राप्त हो जाता है। यही कारण है, कि सरकार पशुपालक किसानों के लिए भी विभिन्न अच्छी योजनाएं लाती हैं, जिससे पशुपालक किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित किया जा सके। किसान की आमदनी का मुख्य साधन कृषि होता है, जिसके माध्यम से भारत के ज्यादातर पशुपालक आवश्यकताओं को भी पूरा कर सकते हैं।

अधिकांश किसान कमजोर आर्थिक स्थिति की वजह से पशुओं के लिए मकान निर्मित नहीं कर पाते हैं। ठंड के मौसम में समान्यतः पशुओं को परेशानी होती है। क्योंकि ठंड के समय ही मकान की जरूरत सबसे ज्यादा होती है। बारिश और ठंड से पशुओं को बचाने के लिए जरूरी है, कि पशुओं के लिए शेड का निर्माण किया जाए। सरकार पशुओं के लिए शेड या घर बनाने के लिए किसानों को 1 लाख 60 हजार रुपए का अनुदान प्रदान कर रही है।

कितना मिलेगा लाभ

मनरेगा पशु शेड योजना से किसानों को व्यापक स्तर पर लाभ मिलेंगे। गौरतलब यह है, कि किसानों को ठंड के मौसम में सामान्य तौर पर दुधारू पशुओं में दूध की कमी का सामना करना पड़ता है। दरअसल, इसकी बड़ी वजह पशुओं के लिए ठंड के मौसम में उचित घर या शेड का न होना भी है। मनरेगा पशु शेड योजना के अंतर्गत पशुओं के लिए घर निर्मित पर सरकार द्वारा किसानों को अनुदान उपलब्ध किया जाता है। इससे पशुओं की सही तरह से देखभाल सुनिश्चित हो सकेगी। शेड में यूरिनल टैंक इत्यादि की व्यवस्था भी कराई जा सकेगी। इससे पशुओं की देखभाल तो होगी ही साथ ही किसानों की आमदनी में भी बढ़ोतरी होगी। साथ ही, किसानों के जीवन स्तर में सुधार देखने को मिलेगा।

मनरेगा पशु शेड योजना

पशुपालक किसानों को पशुओं के लिए घर बनाने पर यह अनुदान प्रदान किया जाता है। इस योजना से ठंड या बारिश से पशुओं को बचाने के लिए घर बनाने के लिए धनराशि मिलती है। पशुओं का घर बनाकर किसान अपने पशु की देखभाल कर सकेंगे और पशु के दूध देने की क्षमता में भी वृद्धि कर सकेंगे। मनरेगा पशु शेड योजना से किसानों को व्यापक लाभ मिल पाएगा।

मनरेगा पशु शेड से कितना लाभ मिलता है

मनरेगा पशु शेड योजना के तहत किसानों को पशु शेड बनाने पर 1 लाख 60 हजार रुपए का अनुदान दिया जाता है। इस योजना का लाभ किसानों को बैंक के माध्यम से दिया जाता है। इस योजना से मिलने वाला पैसा एक तरह से किसानों के लिए ऋण होता है जिसकी ब्याज दर बहुत कम होती है।

योजना के तहत किसको लाभ मिलेगा

मनरेगा पशु शेड योजना के तहत मिलने वाले लाभ की कुछ पात्रता शर्तें इस प्रकार है।
इस योजना का फायदा केवल भारतीय किसानों को ही मुहैय्या कराया जाएगा।
पशुओं की तादात कम से कम 3 अथवा इससे अधिक होनी आवश्यक है।

योजना के लिए अनिवार्य दस्तावेज

पशुओं के लिए घर बनाने वाली इस योजना में आवेदन करने के लिए कुछ जरूरी दस्तावेजों का होना अनिवार्य है। जैसे कि – आधार कार्ड, पैन कार्ड, कृषक पंजीयन, बैंक पासबुक, मोबाइल नम्बर, ईमेल आईडी (अगर हो)

योजना में आवेदन करने की प्रक्रिया

पशुओं के लिए घर निर्मित करने की योजना में अनुदान लेने के लिए नजदीकी सरकारी बैंक शाखा में संपर्क करें। एसबीआई, इस योजना के अंतर्गत लोन प्रदान करती है। शाखा में ही आवेदन फॉर्म भर कर जमा करें। इस प्रकार इस योजना का लाभ किसानों को प्राप्त हो जाएगा।

क्या इस बार भी राज करेगा शिवराज या किसी और के सिर होगा मध्य प्रदेश का ताज ?

शिवराज सिंह

कमल नाथ

ज्योतिरादित्य सिंदिया

विष्णु दत्त शर्मा

netahub.com

NetaHub के साथ जुड़ें और आज ही अपनी सफलता की नई कहानी लिखें!

हिमाचल प्रदेश के किसानों के फायदे के लिए केंद्र सरकार ने अहम फैसला लिया

वर्ष 2021 में केंद्र सरकार ने बाजार इंटरवेंशन योजना के अंतर्गत जम्मू-कश्मीर में किसानों से सीधे सेब की खरीद की थी। इससे किसान भाइयों को काफी घाटे का सामना नहीं करना पड़ा था। बतादें, कि उन्हें उनकी फसल का सही भाव मिला था। यही कारण है, कि अब हिमाचल के किसानों ने केंद्र सरकार के समक्ष सेब की खरीदारी शुरू करने की मांग की है।

हिमाचल प्रदेश के सेब उत्पादक किसानों के लिए खुशखबरी है। हिमाचल प्रदेश सरकार की मांग पर केंद्र सरकार ने नाफेड के माध्यम से सेब की खरीद करने के लिए एक कमेटी का गठन कर दिया है। यह कमेटी हिमाचल सरकार की मांग की समीक्षा करेगी। वहीं, इसके बाद केंद्र सरकार को एक रिपोर्ट सौंपेगी। ऐसा कहा जा रहा है, कि रिपोर्ट के आधार पर केंद्र सरकार धान-गेहूं की भांति किसानों से नाफेड के माध्यम से सेब की खरादारी करने के लिए निर्णय ले सकती है। इससे कृषकों को सेब की अच्छी कीमत मिल सकेगी।

हिमाचल प्रदेश में सेब की फसल को हानि

दरअसल, इस वर्ष हिमाचल प्रदेश में सेब की फसलों को काफी ज्यादा नुकसान पहुंचा है। अत्यधिक बारिश होने से सेब के बहुत से बागान भूस्खलन की चपेट में आकर जमीदोंज हो गए। इससे किसानों को काफी ज्यादा आर्थिक नुकसान हुआ है। साथ ही, बेमौसम बारिश होने की वजह से सेब के फल भी पेड़ पर ही सड़ गए। इसके चलते भी उत्पादन काफी प्रभावित हुआ है। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में बारिश से बहुत सारी सड़कें ध्वस्त हो गईं। यही वजह है, जो बागों से सेब मंडियों तक समय पर नहीं पहुंच पा रहे हैं।

केंद्र सरकार ने एक कमेटी का गठन कर दिया है

प्रदेश के स्थानीय किसानों का कहना है, कि एक तो पहले मौसम ने फसल को बर्बाद कर दिया है। अब मार्केट में सेब की सही कीमत नहीं मिल रही है। इससे उन्हें काफी घाटा उठाना पड़ रहा है। अब ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार को धान-गेहूं की तर्ज पर किसानों से सेब की भी सीधी खरीदारी करनी चाहिए। यही कारण है, कि किसानों की मांग पर हिमाचल सरकार ने केंद्र से नाफेड के जरिए सेब की खरीद शुरू करने की मांग रखी है। इसके बाद केंद्र सरकार ने एक कमेटी का गठन कर दिया।

हिमाचल प्रदेश की कितने प्रतिशत हिस्सेदारी है

बतादें, कि कश्मीर के उपरांत सबसे ज्यादा सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश में किया जाता है। यह सेब की पैदावार के मामले में भारत के अंदर दूसरे स्थान पर आता है।

पीएम मोदी ने हिमाचल प्रदेश के किसानों के हित में उठाया कदम

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज उत्तराखंड के दौरे पर हैं। जहां उन्होंने पार्वती कुंड और जागेश्वर धाम में पूजा करने के पश्चात पिथौरागढ़ से उत्तराखंड के लिए 4200 करोड़ की योजनाओं का लोकार्पण भी किया। परियोजनाओं में कृषि आधारित एवं ग्रामीण विकास जैसी योजनाओं पर खास ध्यान दिया गया। सरकार इस परियोजना के आधार पर ही 21,398 पॉली-हाउस के निर्माण की योजना को तैयार कर रही है। प्रधानमंत्री ने अपने ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट करते हुए लिखा कि "देवभूमि उत्तराखंड के जन-जन के कल्याण और राज्य के तेज विकास के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है."

प्रधानमंत्री के इस दौरे के दौरान उत्तराखंड के पारंपरिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी मंचन किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तराखंड के पिथौरागढ़ में 4500 करोड़ की परियोजनाओं का भी शिलन्यास किया। प्रधानमंत्री ने रिमोट के बटन को दबाकर उत्तराखंड को 4500 करोड़ की परियोजनाओं को हरी झंडी दी।

इन परियोजनाओं के लिए 4500 करोड़ रूपए

प्रधानमंत्री मोदी ने जागेश्वर धाम के दर्शन कर उत्तराखंड के लिए 4500 करोड़ की परियोजनाओं का शिलान्यास किया है। इन परियोजनाओं के अंतर्गत ग्रामीण विकास, बागवानी, सिंचाई, पेयजल, शिक्षा, सड़क, बिजली, स्वास्थ्य और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों से जुड़ी लगभग 4,200 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं को शामिल किया जायेगा। सरकार द्वारा इन परियोजनाओं को शीघ्र ही प्रदेश के विकास के लिए अलग-अलग क्षेत्रों को बढ़ाने में लगाएगी।

शासन से कोई मदद न मिलने पर किसानों ने स्वयं अपने खेतों की सिंचाई के लिए गजब जुगाड़ किया

शासन के ढ़िलाई बरतने के चलते बिलाईगढ़ ब्लॉक के किसानों ने गजब कमाल कर दिखाया है। एक लंबे अरसे से पानी की मांग पूरी नहीं होने पर किसानों ने चंदे से 15 लाख का बजट तैयार कर खुद के लिए सिंचाई व्यवस्था कर ली है।

हम यह बात बखूबी जानते हैं, कि हमारे सिस्टम का शिकार कोई न कोई बनता ही है। विशेष कर गांव में खेती करने वाले किसान इसके भुक्तभोगी होते हैं। आए दिन ऐसे समाचार कान में पड़ते ही रहते है। जहां किसान किसी न किसी तौर पर परेशान होते ही आए हैं। ऐसा ही एक वाकया देखने को मिला बिलाईगढ़ ब्लाक के किसानों के साथ जहां उन्हें पंचायत और शासन की उदासीनता को झेलना पड़ा।

किसानों को सिंचाई की काफी समस्या का सामना करना पड़ रहा है

बिलाईगढ़ विधानसभा के अंतर्गत आने वाला ग्राम पंचायत बन्दारी जहां की जनसंख्या 1500 से ज्यादा हैं। यहां की ज्यादातर आबादी खेती-किसानी पर निर्भर है। यहां के ग्रामीणों की मानें तो गांव की कृषि सीमा तकरीबन 750 एकड़ तक फैली है, जिनकी सिंचाई जोंक नदी से निकलने वाली नहर परियोजना से हो जाती हैं। परंतु, उन्हें उस नहर से पानी नहीं मिल रहा हैं, जिसकी वजह से किसानों को खेतों में सिंचाई के लिए समस्या का सामना करना पड़ रहा हैं।

किसानों की मेहनत कितना रंग लाई

किसानों का आरोप है, कि विगत 20 वर्षों से प्रशासन और पंचायत से सिंचाई व्यवस्था की मांग करते आ रहें हैं। बावजूद इसके उन्हें सिंचाई व्यवस्था अब तक मुहैय्या नहीं हो पाई हैं। वर्तमान में यहां के किसानों ने शासन के सिस्टम को ठेंगा दिखाते हुए खुद ही अद्भुत कदम की हैं। ग्रामीणों ने चन्दा एकत्रित कर तकरीबन 15 लाख रुपये की बजट से पाईप लाईन विस्तार की शुरुआत कर दी है। ग्रामीणों का कहना है, कि जोंक नदी से होकर गुजर रही नहर में ही 15 हार्श पावर की मोटर स्थापित की जाएगी, जिनसे ही 750 एकड़ कृषि भूमि को पानी मिलेगा और खेतों की सिंचाई होगी।

इस संबंध में पंचायत का रवैया भी काफी उदासीन दिखाई दे रहा है

साथ ही, किसानों ने पंचायत के जनप्रतिनिधि के रवैये को उदासीन कहते हुए कहा है, कि पंचायत की तरफ से सिंचाई के लिए कुछ मदद करने की भी बात कही गई थी। परंतु अब तक उनसे किसी प्रकार की कोई मदद नहीं मिली है। अंततः कहीं भी किसी ओर से उन्हें सिंचाई की व्यवस्था नहीं मिलने की स्थिति में बड़ा कदम उठाते हुए खुद ही ग्रामीणों ने चंदा का पैसा इकठ्ठा किया हैं और पाइपलाइन का विस्तार किया हैं। बहरहाल ऐसी स्थिति में ग्रामीणों द्वारा स्वयं के खर्चों से पाइपलाइन का विस्तार करना शासन के सिस्टम पर ही सवाल खड़े कर रहा है।

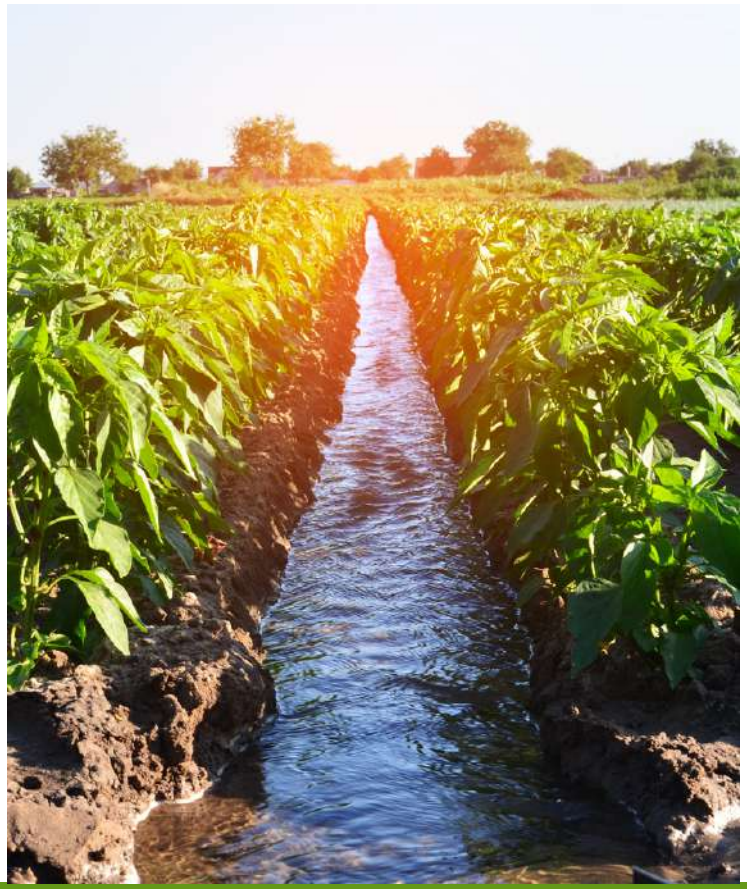

कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की सरसों की तीन नई उन्नत किस्में, जानें इनकी खासियत

सीएसएसआरआई (CSSRI) के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सोडिक मतलब कि क्षारीय भूमि इलाकों के लिए सरसों की तीन उन्नत किस्में सीएस-61, सीएस-62 और सीएस-64 विकसित की गई हैं। बतादें, कि विकसित की गई सरसों की ये तीनों किस्में कृषकों को वर्ष 2024 तक मिलेगी।

भारत के किसानों को ज्यादा लाभ हांसिल कराने के लिए केंद्रीय मृदा एवं लवणता अनुसंधान संस्थान (CSSRI) ने सरसों की 3 नवीन उन्नत किस्मों को तैयार किया है। सरसों की इन तीनों बेहतरीन किस्मों से किसानों को ज्यादा उत्पादन मिलेगा। साथ ही, सरसों की इन तीनों किस्मों की खेती सोडिक अर्थात क्षारीय भूमि में भी सहजता से की जा सकेगी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, वैज्ञानिकों के द्वारा विकसित की गई सरसों की तीनों प्रजातियां किसानों के हाथों में साल 2024 तक उपलब्ध हो पाऐंगी। दरअसल, हम बात कर रहे हैं, सीएस-61, सीएस-62 और सीएस-64 किस्मों के बारे में।

ज्ञात हो कि इन किस्मों से पूर्व भी कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा सरसों की कुछ लवण सहनशील किस्में सीएस-56, सीएस-58 और सीएस-60 किस्में तैयार की जा चुकी हैं, जो वर्तमान में किसानों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके साथ ही, सरसों के यह बीज कृषि विभागों व बीज संस्थानों के द्वारा बांटे जा रहे हैं।

सरसों की नवीन उन्नत किस्मों की खेती

केंद्रीय मृदा एवं लवणता अनुसंधान संस्थान में विकसित की गईं सरसों की बेहतरीन किस्में सीएस-61, सीएस-62 और सीएस-64 वैसे तो प्रत्येक इलाके में अच्छी पैदावार देंगी। परंतु, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और जम्मू, कश्मीर के क्षेत्रों में ज्यादा उपज प्रदान करेंगी। बतादें, कि इन तीनों किस्मों से किसान के खेतों में सरसों की फसल बेहतरीन ढ़ंग से लहलहाएगी। इसके अतिरिक्त बाजार में भी इसकी अच्छी-खासी कीमत मिल सकेगी।

सरसों की इन विकसित की गई उन्नत किस्मों की खूबियां

सरसों की इन तीनों उन्नत किस्मों की खेती ऐसे इलाकों के लिए वरदान का काम करेगी, जहां की मिट्टी में सरसों की खेती नहीं हो पाती है। सरसों की सीएस-61, सीएस-62 एवं सीएस-64 किस्म को ऐसे ही क्षेत्रों के लिए तैयार किया गया है, जिन इलाकों में आज भी सरसों की पैदावार नहीं होती है। वहां के किसान भाई भी इन किस्मों की सहायता से सरसों की फसल का फायदा उठा सकें। साथ ही, सरसों की यह तीनों नवीन किस्में प्रति हेक्टेयर तकरीबन 27 से 29 क्विंटल तक उत्पादन देंगी। वहीं, सोडिक मतलब की क्षारीय जमीन में यह किस्म प्रति हेक्टेयर 21 से 23 क्विंटल पैदावार प्रदान करेगी। इसके अतिरिक्त सरसों की इन किस्मों में तेल की मात्रा लगभग 41 फीसद तक रहेगी।

भारत के किन क्षेत्रों में सरसों की खेती नहीं होती है

भारत के बहुत से राज्यों में सरसों की खेती नहीं हो पाती है। जैसे कि हरियाणा एवं पंजाब के कुछ इलाकों में सरसों का उत्पादन नहीं होता है। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़, कौशांबी, लखनऊ, कानपुर, इटावा और हरदोई इत्यादि बहुत सारे क्षेत्रों में सरसों की खेती नहीं की जाती है। वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई सरसों की इन तीनों किस्मों से अब इन क्षेत्रों में भी सरसों की फसल लहराएगी।

गन्ने की 10 नई किस्में जारी की

भारत सरकार ने केंद्रीय बीज समिति के परामर्श के बाद गन्ने की 10 नई किस्में जारी की हैं

गन्ना किसानों के लिए 10 उन्नत किस्में बाजार में उपलब्ध की गई हैं। बतादें, कि गन्ने की इन उन्नत किस्मों की खेती आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, यूपी, हरियाणा, मध्य प्रदेश और पंजाब के किसान बड़ी सुगमता से कर सकते हैं। चलिए आज हम आपको इस लेख में गन्ने की इन 10 उन्नत किस्मों के संबंध में विस्तार से जानकारी प्रदान करेंगे।

भारत में गन्ना एक नकदी फसल है। गन्ने की खेती किसान वाणिज्यिक उद्देश्य से भी किया करते हैं। बतादें, कि किसान इससे चीनी, गुड़, शराब एवं इथेनॉल जैसे उत्पाद भी तैयार किए जाते हैं। साथ ही, गन्ने की फसल से तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों के किसानों को बेहतरीन कमाई भी होती है। किसानों द्वारा गन्ने की बुवाई अक्टूबर से नवंबर माह के आखिर तक और बसंत कालीन गन्ने की बुवाई फरवरी से मार्च माह में की जाती है। इसके अतिरिक्त, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गन्ना फसल को एक सुरक्षित फसल माना गया है। इसकी वजह यह है, कि गन्ने की फसल पर जलवायु परिवर्तन का कोई विशेष असर नहीं पड़ता है।

भारत सरकार ने जारी की गन्ने की 10 नवीन उन्नत किस्में

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने केंद्रीय बीज समिति के परामर्श के पश्चात गन्ने की 10 नवीन किस्में जारी की हैं। इन किस्मों को जारी करने का प्रमुख लक्ष्य गन्ने की खेती करने के लिए गन्ने की उन्नत किस्मों को प्रोत्साहन देना है। इसके साथ ही गन्ना किसान ज्यादा उत्पादन के साथ बंपर आमदनी अर्जित कर सकें।

जानिए गन्ने की 10 उन्नत किस्मों के बारे में

गन्ने की ये समस्त उन्नत किस्में ओपन पोलिनेटेड मतलब कि देसी किस्में हैं। इन किस्मों के बीजों की उपलब्धता या पैदावार इन्हीं के जरिए से हो जाती है। इसके लिए सबसे बेहतर पौधे का चुनाव करके इन बीजों का उत्पादन किया जाता है। इसके अतिरिक्त इन किस्मों के बीजों का एक फायदा यह भी है, कि इन सभी किस्मों का स्वाद इनके हाइब्रिड किस्मों से काफी अच्छा होता है। आइए अब जानते हैं गन्ने की इन 10 उन्नत किस्मों के बारे में।

इक्षु -15 (सीओएलके 16466)

इक्षु -15 (सीओएलके 16466) किस्म से बेहतरीन उत्पादन हांसिल होगा। यह किस्म उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम राज्य के लिए अनुमोदित की गई है।

राजेंद्र गन्ना-5 (सीओपी 11438)

गन्ने की यह किस्म उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम के लिए अनुमोदित की गई है।

सीओ 11015 (अतुल्य)

यह किस्म बाकी किस्मों की तुलना में ज्यादा उत्पादन देती है। क्योंकि इसमें कल्लों की संख्या ज्यादा निकलती है। गन्ने की यह उन्नत किस्म आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की जलवायु के अनुकूल है।

सीओ 14005 (अरुणिमा)

गन्ने की उन्नत किस्म Co 14005 (Arunima) की खेती तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में बड़ी सहजता से की जा सकती है।

फुले गन्ना 13007 (एमएस 14082)

गन्ने की उन्नत किस्म Phule Sugarcane 13007 (MS 14082) की खेती तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक में बड़ी सहजता से की जा सकती है।

इक्षु -10 (सीओएलके 14201)

गन्ने की Ikshu-10 (CoLK 14201) किस्म को आईसीएआर के द्वारा विकसित किया गया है। बतादें, कि किस्म के अंदर भी लाल सड़न रोग प्रतिरोध की क्षमता है। यह किस्म राजस्थान, उत्तर प्रदेश (पश्चिमी और मध्य), उत्तराखंड (उत्तर पश्चिम क्षेत्र), पंजाब, हरियाणा की जलवायु के अनुरूप है।

किसान समाचार

भारत सरकार द्वारा 6 रबी फसलों की एमएसपी में की गई बढ़ोतरी से किसानों में खुशी की लहर

भारत सरकार ने सरसों, गेहूं, मसूर और चना समेत 6 रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी कर दी है। इससे विशेष कर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा और पंजाब के करोड़ों किसानों को लाभ मिलेगा। साथ ही, किसानों की आमदनी भी बढ़ जाएगी।

केंद्र सरकार की तरफ से किसानों को दिवाली का शानदार तोहफा प्रदान किया गया है। उसने गेहूं सहित 6 रबी फसलों की एमएसपी बढ़ा दी है। इससे भारत के करोड़ों किसानों का लाभ मिलेगा। उनकी आमदनी में भी काफी इजाफा होगा। विशेष बात यह है, कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा रबी फसलों की एमएसपी में 2% से लगाकर 7% फीसद तक की वृद्धि की है। वहीं, केंद्रीय कैबिनेट द्वारा एमएसपी की बढ़ोतरी पर मुहर भी लग चुकी है। मतलब कि फसल सीजन 2024- 25 के लिए जब रबी फसलों की खरीद आरंभ होगी, तो किसानों को नवीन एमएसपी की दर से धनराशि मिलेगी।

रबी फसल में आने वाली फसलें

गेहूं, अलसी, सरसों, कुसुम, मटर, चना एवं जौ रबी फसल में आते हैं। इनकी बुवाई अक्टूबर माह से नवंबर माह के बीच की जाती है। गेंहू की बात करें तो उत्तर प्रदेश इसका सबसे बड़ा उत्पादक राज्य कहा जाता है। इसके पश्चात मध्य प्रदेश, गुजरात, बिहार पंजाब, हरियाणा और राजस्थान का नंबर आता है। वर्तमान में केंद्र सरकार ने गेहूं की एमएसपी में 150 रुपये प्रति क्विंटल के भाव से बढ़ोतरी की है। इसके उपरांत गेहूं की एमएसपी रबी मार्केटिंग सीजन 2024-25 के लिए 2275 रुपये प्रति क्विंटल हो गई। मतलब, कि पीएम मोदी के कैबिनेट के निर्णय से , गुजरात, बिहार, यूपी, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के करोड़ों किसानों को काफी ज्यादा लाभ मिलेगा।

भारत में सरसों का कहाँ और कितना उत्पादन किया जाता है

भारत में इसी प्रकार सरसों की पैदावार में राजस्थान अव्वल राज्य है। इसकी भारत में कुल उत्पादित सरसों में 46.7 फीसद भागीदारी है। इसका मतलब यह हुआ है, कि राजस्थान एकमात्र 46.7 फीसद सरसों की पैदावार करती है। इसके पश्चात उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा और पश्चिम बंगाल का नंबर आता है। फिलहाल, केंद्र सरकार ने सरसों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में 200 रुपये प्रति क्विंटल की दर से इजाफा किया है। इसके साथ ही सरसों का न्यूनतम समर्थन मूल्य 6550 रुपये प्रति क्विंटल तक पहुँच चुका है। ऐसी स्थिति में इन राज्यों के किसानों को बेहद लाभ मिलेगा।

सरसों का उत्पादन क्षेत्रफल बढ़ने से महंगाई में गिरावट आएगी

साथ ही, कृषि विशेषज्ञों का कहना है, कि भारत में खपत के अनुसार सरसों की पैदावार काफी कम होती है। ऐसी परिस्थिति में विदेश से खाद्य तेलों का आयात करना पड़ता है। परंतु, केंद्र सरकार द्वारा एमएसपी में बढ़ोतरी करने का निर्णय समुचित समय पर लिया गया है। क्योंकि, वर्तमान में सरसों की बिजाई का सीजन चल रहा है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि एमएसपी में इजाफा होने से कृषक अधिक कमाई करने के लिए अधिक क्षेत्रफल में सरसों की बिजाई करेंगे। इससे भारत में सरसों का उत्पादन बढ़ जाएगा, जिससे सरसों के तेल की कीमतों में गिरावट आ सकती है। इससे महंगाई में भी काफी गिरावट आएगी।

SHAKTIMAN®

MAKING AGRICULTURE MORE ECONOMICAL®

प्रमुख विशेषताएं

- सबसे बड़ा रोटावेटर निर्माता
- मल्टी स्पीड गियर बॉक्स
- बड़े बियरिंग्स
- बेहतर जुताई के लिए बड़े ब्लेड

बेजोड़ शक्ति
बेजोड़ प्रदर्शन

+91 (2827) 234567
info@shaktimanagro.com
www.shaktimanagro.com

इस राज्य में मधुमक्खी पालन करने पर कृषकों को 90 प्रतिशत अनुदान मिलेगा

खेती किसानी के साथ ही मधुमक्खी पालन (BEEKEEPING) करने से भी किसानों की आमदनी बढ़ सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए बिहार उद्यान निदेशालय ने मधुमक्खी पालन (BEEKEEPING) और हनी मिशन योजना की शुरुआत की है। इस योजना के अंतर्गत मधुमक्खी पालन करने वाले किसान भाइयों को 90 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा।

किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए बिहार उद्यान निदेशालय द्वारा मधुमक्खी पालन के लिए योजना जारी की जा रही है। यह योजना बी कीपिंग एंड हनी मिशन के नाम से चलाई जा रही है। दरअसल, इस योजना के अंतर्गत मधुमक्खी पालन करने वाले किसानों को अनुदान दिया जाता है। सामान्य वर्ग के किसानों को 75 प्रतिशत और एससी, एसटी के लिए राज्य सरकार द्वारा 90 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। मधुमक्खी पालन के लिए औजार जैसे- हनी प्रोसेसिंग, बाटलिंग व हनी टेस्टिंग और मधुमक्खी बक्सा पर अनुदान का प्रावधान किया गया है। गौरतलब है, कि राष्ट्रीय बागवानी मिशन एवं मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत कुल अनुदान सामान्य जाति के लिए 75 प्रतिशत और अनुसूचित जाति के लिए 90 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जाता है।

बिहार सरकार शहद उत्पादन को प्रोत्साहन दे रही है

बिहार सरकार शहद उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए किसानों को 75,000 मधुमक्खी के बक्से और छत्ते देगी। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि डीबीटी पोर्टल पर रजिस्टर्ड किसान ही इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। बक्से के साथ ही मधुमक्खी पालक छत्ता भी प्रदान किया जाएगा। छत्ते में रानी, ड्रोन और वर्कर्स के साथ 8 फ्रेम उपस्थित होंगे। सभी फ्रेमों की भीतरी दीवार मधुमक्खियों और ब्रुड्स से पूर्णतय ढंकी होगी। इसके साथ ही शहद निकलाने के लिए मधु निष्कासन यंत्र पर भी अनुदान दिया जाएगा।

मधुमक्खी पालन से होने वाले लाभ

अगर किसान इसे व्यवसाय के रूप में करते हैं, तो इसके बहुत सारे लाभ हैं। वहीं, इससे फसलों के परागण में भी काफी सहायता मिलती है। इससे फसल का उत्पादन बढ़ता है। किसान मधुमक्खी पालन करके उससे निकले शहद को बाजारों में बेचकर काफी बेहतरीन मुनाफा भी कमा सकते हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय मेरठ में किसान मेला का हुआ शुभारंभ

सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि विवि में 17 अक्टूबर से तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया है। इस किसान मेले में कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित सभी विज्ञान केंद्रों एवं बहुत सारी कंपनियों ने अपने स्टॉल लगाए हैं। यह कार्यक्रम 17 अक्टूबर से लेकर 19 अक्टूबर तक चलेगा।

सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि विवि में 17 अक्टूबर के पहले दिन कार्यक्रम का शुभारंभ महामहिम राज्यपाल आनंदी बेन पटेल के द्वारा फीता काटकर किया गया। कार्यक्रम के दौरान जहां पर कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित समस्त विज्ञान केंद्रों एवं विभिन्न कंपनियों ने अपने स्टॉल स्थापित किए।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस मेले के जरिए किसानों को एक साथ लाने की कोशिश की जा रही है। सरदार वल्लभभाई पटेल विश्वविद्यालय में इस मेले के दौरान गोलू-2 उन्नत नस्ल का भैंसा और डॉग शो मुख्य आकर्षण का केंद्र बने हैं। साथ ही, कृषि मेले का प्रमुख मकसद किसानों की दिक्कत परेशानियों का निवारण करना भी है। इसके अतिरिक्त फल -फूल, सब्जी, नवीनतम तकनीक को प्रोत्साहन देने के लिए यह मंच उपलब्ध कराया गया है।

आज सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में मेले के दौरान मेरठ में महामहिम राज्यपाल महोदया उत्तर प्रदेश, श्रीमती आनंदी बेन पटेल जी द्वारा अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं अवलोकन किया गया। साथ ही, 19वें एशियन गेम्स की पदक विजेत्री बेटीयों पारुल चौधरी एवं किरण बालियान को भी सम्मानित किया गया। मेले के इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार में कृषि राज्य मंत्री श्री बलदेव सिंह औलख जी, @SVPUAT के कुलपति डॉ के के सिंह जी, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल समिति के अध्यक्ष डॉ संजय सिंह जी, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती संगीता शुक्ला जी, वरिष्ठ वैज्ञानिकगण, किसान एवं छात्र उपस्थित रहे।

पंजाब में पराली जलाने के मामलों ने तोड़ा विगत दो साल का रिकॉर्ड

पंजाब भर में पराली जलाने की घटनाओं में बढ़ोतरी होने के साथ, राज्य के ज्यादातर गांवों में धुंध की हालत बनी हुई है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि पंजाब में इस साल घटनाओं की कुल संख्या 1,027 के आंकड़े को छू गई है।

भारत के करीब समस्त राज्यों में धान की कटाई आरंभ हो चुकी है। साथ ही, हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी पंजाब में पराली जलाने की घटनाएं देखने को मिल रही हैं। हालांकि, इस वर्ष पराली जलाने के मामलों में काफी वृद्धि देखने को मिली है। नतीजतन, राज्य के ज्यादातर गांवों में धुंध की स्थिति बनी हुई है। ट्रिब्यून इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, इस सीजन में खेतों में आग लगने के मामले विगत दो वर्षों की अपेक्षा में काफी ज्यादा हैं। बतादें, कि इससे सरकार द्वारा फसल अवशेषों को जलाने पर प्रतिबंध लगाने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करने पर सवाल खड़े हो रहे हैं। ज्ञात हो कि सोमवार को पंजाब में पराली जलाने के 58 मामले दाखिल किए गए हैं। इसके साथ ही इस वर्ष घटनाओं की कुल तादात 1,027 के चार अंकों के आंकड़े तक पहुँच चुकी है।

पराली जलाने के मामलों में बढ़ोतरी

गौरतलब है, कि पंजाब में आज तक खेतों में आग लगने की अत्यधिक घटनाएं सीमावर्ती क्षेत्रों से दर्ज की जा रही थीं। फिलहाल, मालवा क्षेत्र में किसानों ने धान की पराली जलाना आरंभ कर दिया है। इसका प्रभाव पंजाब एवं दिल्ली की वायु गुणवत्ता पर भी देखने को मिलेगा। पंजाब रिमोट सेंसिंग सेंटर (पीआरएससी) के आंकड़ों के मुताबिक, 9 अक्टूबर को राज्य में 58 पराली जलाने की घटनाओं को एक सैटेलाइट द्वारा कैद किया गया था। वहीं, 2021 में उसी दिन 114 पराली जलाने की घटनाओं को दर्ज किया गया था। साथ ही, 2022 में ऐसे तीन मामले सामने आए थे।

पराली जलाने की घटनाओं ने विगत दो वर्षों का तोड़ा रिकॉर्ड

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इसमें चिंता का विषय यह है, कि इस वर्ष की कुल संख्या 1,027 विगत दो वर्षों के संबंधित आंकड़ों से काफी ज्यादा है। 2022 और 2021 के दौरान पंजाब में 9 अक्टूबर तक क्रमशः 714 और 614 घटनाएं दर्ज हुई थीं। दरअसल, आज तक के मामले विगत वर्ष की तुलना में 43.8% ज्यादा और 2021 के आंकड़े (9 अक्टूबर तक) से 67% अधिक हैं। कुल मिलाकर, 2022 में 49,900 खेतों में आग लगने की घटनाएं दर्ज की गईं। 2021 में 71,304; 2020 में 76,590; और 2019 में 52,991 घटनाऐं दर्ज हुई थीं।

पराली जलाने के मामलों में वृद्धि की संभावना – कृषि विभाग

कृषि विभाग के एक अधिकारी का कहना है, कि "संगरूर, पटियाला और लुधियाना में किसानों ने फसल की कटाई शुरू कर दी है और इन तीन जिलों में अगले सप्ताह तक खेत में आग लगने का आंकड़ा काफी बढ़ जाएगा।" जानकारों का कहना है, कि "कुछ खास नहीं किया जा सकता, क्योंकि किसान 2,500 रुपये प्रति एकड़ मुआवजे पर अड़े हुए हैं। परंतु, सरकार इस बात पर बिल्कुल सहमत नहीं हुई है।" साथ ही, अमृतसर प्रशासन ने पराली जलाने पर 279 लोगों पर 6.97 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है।

पंजाब के इन क्षेत्रों में कुल आलू उत्पादन का 80 प्रतिशत बीज के लिए उपयोग होता है

पंजाब के कपूरथला और जालंधर में होने वाले आलू का सर्वाधिक उपयोग बीजों के लिए किया जाता है। आलू की ये किस्में कुफरी पुखराज और ज्योति हैं। भारत में इनकी सबसे अधिक खरीदारी कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और दिल्ली में की जाती है।

विश्व में आलू उत्पादन के संबंध में भारत दूसरे स्थान पर आता है। परंतु, यदि हम खपत की बात करें, तो भारत में ही इसका काफी भाग खाने में उपयोग कर लिया जाता है। परंतु, आज हम आपको आलू की पुखराज और ज्योति किस्म के विषय में बताने जा रहे हैं, जिसकी मांग भारत ही नहीं, बल्कि विश्व भर में है। हम बात कर रहे हैं, पंजाब के कपूरथला-जालंधर जनपद में हो रहे आलू के विषय में। दरअसल यहां होने वाले आलू की मांग इसलिए ज्यादा है, क्योंकि इसका बीज उत्पादन एवं गुणवत्ता के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण माने जाने वाला बीज है।

यहां के समकुल आलू उत्पादन का 85 फीसद बीजों के लिए होता है

कपूरथला और जालंधर में होने वाले इस आलू की बात करें, तो इसकी कुल पैदावार का 85 फीसद तो सिर्फ बीजों के लिए ही निकाल दिया जाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार, इन क्षेत्रों में समकुल आलू उत्पादन का 85 प्रतिशत किसान बीज के लिए ही निकाल देते हैं। इसकी प्रमुख वजह यह है, कि आलू की तुलना में उसके बीजों को बेचने पर किसानों का मुनाफा कई गुना तक बढ़ जाता है। भारत के बहुत से किसान तो इन बीजों की बुकिंग यहां के किसानों से फसल के काटने से पहले ही करा लेते हैं।

सबसे ज्यादा पुखराज और ज्योति किस्म की खेती की जाती है

आलू के लिए पुखराज और ज्योति की किस्में पंजाब के दोआब क्षेत्र की सबसे ज्यादा बोई जाने वाली किस्मों में सबसे खास हैं। इसकी मुख्य वजह है, कि यह किस्में दोआब क्षेत्र में सबसे ज्यादा देखी जाती हैं। इसके होने वाले बीजों के द्वारा जो उत्पादन मिलता है, वो काफी ज्यादा होता है। यही कारण है, कि इन किस्मों की खेती इन क्षेत्रों में सबसे ज्यादा होती है।

जानें कितने हेक्टेयर में इसकी खेती होती है

पंजाब में आलू की इस फसल को जनपद में बहुत बड़ी मात्रा में बोया जाता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इसकी जनपद में लगभग 10000 हेक्टेयर में बुवाई की जाती है। वहीं, यदि हम इसके उत्पादन की बात करें, तो तकरीबन 2 लाख मैट्रिक टन आलू की उपज की पैदावार जनपद में प्रति वर्ष होती है।

इन राज्यों में सप्लाई की जाती है

कपूरथला में पैदा होने वाले इस आलू को भारत के विभिन्न राज्यों द्वारा काफी पसंद किया जाता है। परंतु, यदि हम इसकी सबसे अधिक मांग की बात करें, तो यह आलू सर्वाधिक कर्नाटक, पश्चिम बंगाल एवं दिल्ली के द्वारा खरीदा जाता है। इसके अतिरिक्त उत्तराखंड और कुछ मात्रा में उत्तर प्रदेश के अंदर भी खरीदा जाता है।

जानिए धान कटाई की सबसे बेहतरीन और शानदार मशीन के बारे में

जानिए धान कटाई की सबसे बेहतरीन और शानदार मशीन के बारे में

फसलों की कटाई करने के लिए किसान कई तरह के महंगे उपकरण को अपनाते हैं। परंतु, छोटू रीपर मशीन बाजार में धान कटाई करने वाली सबसे सस्ती एवं जबरदस्त मशीन है। अपनी फसल की कटाई के साथ-साथ ज्यादा आमदनी कमा सकते हैं। फसलों की कटाई के लिए किसान बाजार से विभिन्न प्रकार के महंगे उपकरण खरीदते हैं। परंतु, वहीं छोटे व सीमांत किसान महंगे कृषि उपकरणों को खरीदने के लिए आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हैं, जिसके चलते वह हसिया इत्यादि का उपयोग करते हैं। किसानों की इसी परेशानी को मंदेनजर रखते हुए तकनीकी क्षेत्र की कंपनियां भी किसानों के बजट के हिसाब से उपकरणों को तैयार करने लगी हैं।

दरअसल, फसल कटाई में रीपर मशीन का नाम सबसे ज्यादा सुनने को मिलता है। बतादें, कि यह मशीन गेहूं, धान, धनिया एवं ज्वार की फसल की कटाई बेहद ही सुगमता से करती है। इस मशीन की विशेषता यह है, कि इसमें किसान ब्लेड बदलकर बाकी फसलों की कटाई भी सहजता से कर सकते हैं। भारतीय बाजार में फसल कटाई के लिए बहुत सारी रेंज की बेहतरीन मशीनें है, जो किसानों के लिए काफी किफायती है। सिर्फ यही नहीं किसान इन मशीनों को घर बैठे ऑनलाइन माध्यम से भी खरीद सकते हैं।

छोटू रीपर मशीन की कीमत काफी किफायती होती है

फसल की कटाई के लिए छोटू रीपर मशीन का इस्तेमाल किसानों के लिए बेहद फायदेमंद है। बतादें, कि इस मशीन से चना, सोयाबीन और बरसीम की फसल की कटाई बड़ी ही सुगमता से की जा सकती है। यह मशीन तकरीबन 1 फुट तक के पौधे की कटाई सहजता से कर सकती है। साथ ही, इस मशीन के इंजन की बात की जाए, तो इसमें 50CC का 4 स्ट्रोक इंजन दिया गया है। इसके साथ-साथ इसमें इलेक्ट्रॉनिक डिस्प्ले के जरिए अन्य जानकारी किसानों को प्रदान की जाती है।

छोटू रीपर मशीन वजन में काफी हल्की होती है। बतादें, कि इसका कुल वजन ही 8-10 किलो ग्राम तक है। अगर हिसाब किताब लगाया जाए तो इस मशीन से गेहूं फसल की कटाई करने पर 4 गुना तक मजदूरी कम लगती है। साथ ही, इस मशीन में ईंधन की खपत की मात्रा ना के बराबर होती है। खेत में छोटू रीपर मशीन से प्रति घंटे 1 लीटर से भी कम तेल की खपत होती है। इस मशीन में किसान ब्लेड बदलकर भी बाकी फसलों की सुगमता से कटाई कर सकते हैं। देखा जाए तो ज्यादा दांत वाले ब्लेड का उपयोग मोटे और कड़े पौधों की कटाई करने के लिए किया जाता है।

छोटू रीपर मशीन के माध्यम से बेहतरीन कमाई होगी

यदि आप इस मशीन का उपयोग किसान के किसी दूसरे खेत में भी करते हैं, तो इससे प्रति दिन अच्छी आय की जा सकती है। प्राप्त हुई जानकारी के मुताबिक, छोटू रीपर मशीन का किराया एक बीघा खेत के लिए 300 रुपए तक है। वहीं, यदि आप एक दिन में 1 एकड़ खेत की फसल कटाई करते हैं, तो दिन में आप 1500 से 1800 रुपए की आसानी से कमाई कर सकते हैं। साथ ही, इस मशीन के अंदर 1 बीघा खेत में न्यूनतम आधा लीटर डीजल लगता है। इसके अतिरिक्त इसके मेंटीनेंस इत्यादि का खर्च निकालकर आपकी आमदनी से 200-300 रुपए की बचत होती है। अब इस तरह से यह मशीन किसानों को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराती है।

इन क्षेत्रों के किसान गेहूं की इन 15 किस्मों का उत्पादन करें

आईसीएआर ने भारत में गेहूं की 15 नवीन किस्मों की पहचान की है। वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई किस्मों से देश में खाद्यान्न पैदावार में बढ़ोतरी होगी। साथ ही, किसानों के लिए गेहूं एवं जौ के लिए नई वैरायटी भी उपलब्ध होंगी।

ICAR और कृषि से संबंधित बाकी संस्थान उन्नत किस्मों के साथ ही ज्यादा पैदावार के लिए निरंतर वैज्ञानिक खोजों की जानकारी किसानों तक पहुंचाते रहते हैं। इसी बीच वैज्ञानिकों ने गेंहूं की दो और जौ की एक नवीन किस्म की भी पहचान की है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, यह नवीन पहचानी गई किस्में उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों में दो अधिक उपज देने वाली किस्में हैं। गेहूं की दो पहचानी गईं किस्मों के नाम HD3386 एवं WH1402 हैं। गेहूं की पहचानी गई नवीन किस्में आईसीएआर-भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल ने महाराणा प्रताप कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, राजस्थान की मदद से विकसित की है।

भिन्न भिन्न किस्में भिन्न भिन्न क्षेत्रों में बंपर उत्पादन देंगी

वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई यह किस्में भारत में खाद्यान्न के उत्पादन में तो वृद्धि करेंगी। साथ ही, किसानों के लिए गेहूं व जौ के लिए नई प्रजाति भी उपलब्ध होंगी। गेहूं की GW547 किस्म की समय पर बिजाई की गई सिंचित भूमि के लिए। साथ ही, CG1040 और DBW359 को असिंचित भूमि के लिए पहचाना गया है। बतादें, कि इसके साथ-साथ प्रायद्वीप के प्रतिबंधित सिंचाई क्षेत्रों के लिए DBW359, NW4028, UAS478, HI8840 एवं HI1665 गेहूं की किस्मों को पहचाना गया है। वैज्ञानिकों का कहना है, कि माल्ट जौ किस्म DWRB219 की पहचान भी उत्तर-पश्चिम के सिंचित इलाकों के लिए जानी गई है।

भारत के विभिन्न इलाकों के शोधकर्ताओं ने भाग लिया

आईसीएआर-आईआईडब्ल्यूबीआर, करनाल के निदेशक डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह के मुताबिक अखिल भारतीय गेहूं एवं जौ सम्मलेन में भारत के विभिन्न इलाकों के शोधकर्ताओं ने भाग लिया था। आईसीएआर किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) एवं निजी बीज कंपनियों के साथ नवीन जारी किस्मों DBW370, DBW371, DBW372, DBW316 और DDW55 की लाइसेंस प्रक्रिया भी आरंभ हो गई हैं। संस्थान के द्वारा बीजों के लिए चलाया जा रहा पोर्टल भी 15 सितंबर से आरंभ हो चुका है।

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई गेंहू की प्रतिरोधी किस्मों को मिला पुरुस्कार

गेहूं रबी सीजन की सबसे अधिक बोई जाने वाली फसल है। किसान ज्यादा पैदावार कर ज्यादा मुनाफा उठा सकें। इसके लिए गेहूं की उन्नत किस्म विकसित की जा रही है। ऐसे में भारतीय गेहूं अनुसंधान संस्थान करनाल के वैज्ञानिकों ने गेहूं की नवीन किस्म डीबीडब्ल्यू 327 को विकसित किया है। यह उच्च उत्पादन देने वाली और रोग-प्रतिरोधी किस्म है।

गेहूं की फसल की ज्यादा उपज बढ़ाने के लिए किसान एवं वैज्ञानिकों की तरफ से कोशिशें की जा रही हैं। इसी कड़ी में भारतीय गेहूं अनुसंधान संस्थान करनाल के वैज्ञानिकों ने गेहूं की एक नवीन प्रजाति डीबीडब्ल्यू- 327 (DBW- 327) विकसित की है, जिससे 30 से 35 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार मिल सकती है। इस किस्म की प्रमुख बात यह है, कि इस गेहूं की फसल पर मौसम का कतई असर नहीं पड़ेगा। इसके उत्पादन में भी कोई अंतर नहीं होगा। गेंहू की यह किस्म रोग प्रतिरोधी है। साथ ही, ये 155 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। साथ ही, यदि उत्पादन की बात की जाए तो इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 80 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। जो कि बाकी किसी भी गेहूं की किस्म से अधिक है।

5 गेंहू की किस्मों के लिए मिला पुरस्कार

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि भारतीय गेहूं अनुसंधान संस्थान करनाल के वैज्ञानिकों ने हाल ही में गेहूं की पांच नवीन किस्में विकसित की हैं। गेहूं की नई किस्मों के तकनीकी विकास के लिए भारतीय गेहूं अनुसंधान संस्थान करनाल को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। यह पुरस्कार केंद्रीय पशुपालन एवं डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला द्वारा प्रदान किया गया है।

गेंहू की प्रतिरोधी किस्म डीबीडब्ल्यू 327

भारतीय गेहूं अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह का कहना है, कि डीबीडब्ल्यू 327 (DBW 327) गेहूं की नवीन किस्म एक प्रतिरोधी किस्म है। इस किस्म की गेहूं की फसल में कीटनाशकों के खात्मे के लिए किए गए छिड़काव की लागत भी कम होगी। इसकी पैदावार से किसानों को ज्यादा मुनाफा अर्जित होगा।

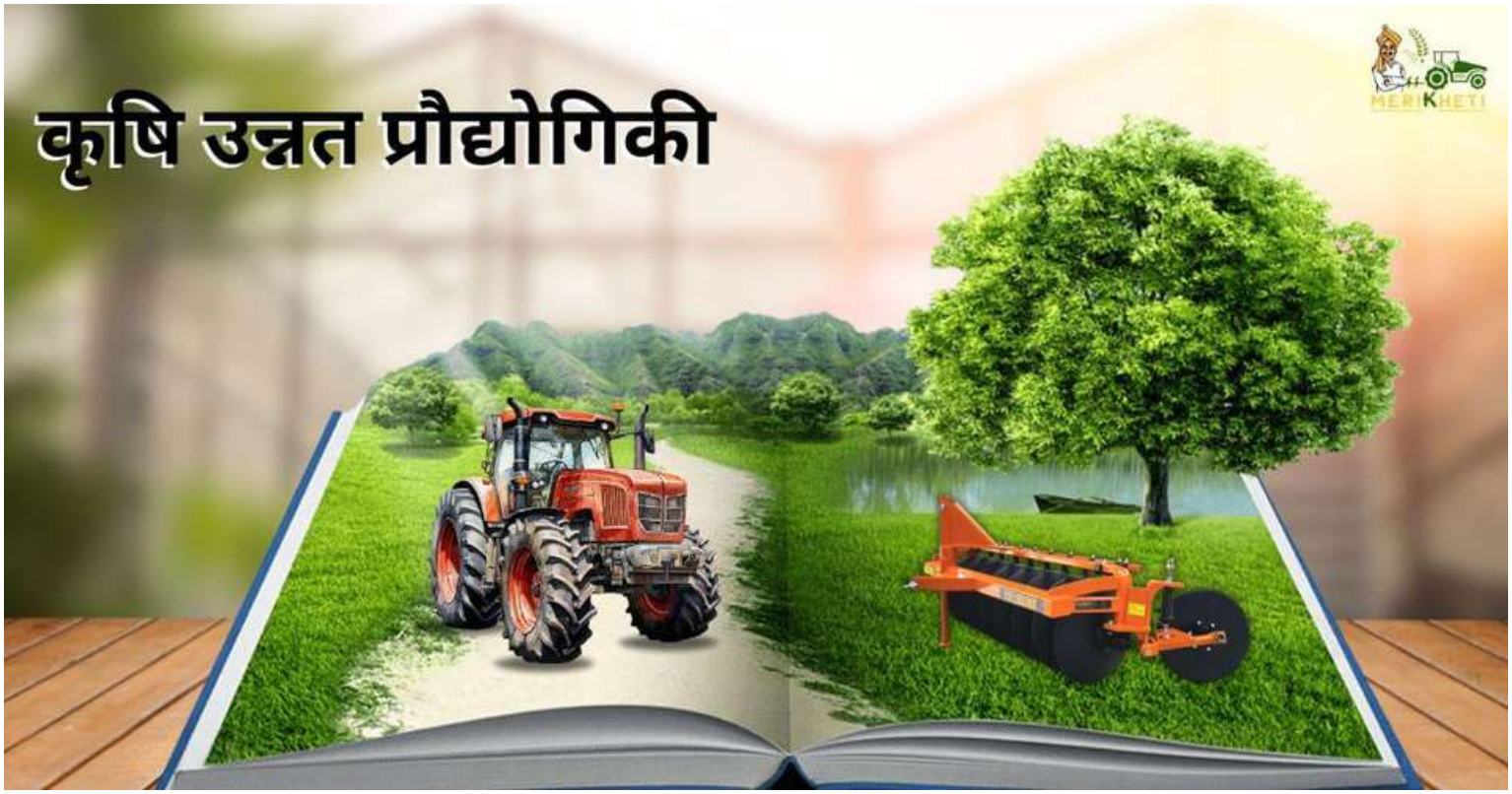

20 नवंबर से कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर आधारित एक छोटा सा कोर्स पाठ्यक्रम आयोजित होगा

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र अगले महीने यानी कि कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर आधारित एक छोटा सा पांच दिवसीय कोर्स आयोजित करने के लिए तैयार है। कोर्स 20 नवंबर को गाजियाबाद से आरंभ किया जायेगा।

दरअसल, भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र कृषि में बढ़ी हुई स्पेस तकनीक के चलते फिलहाल एक योजना तैयार कर रही है। जो कि उन्नत खेती और सटीक अनुमान के आधार पर खेती की उन्नति एवं प्रगति के लिए एक पांच दिवसीय कोर्स को तैयार करेगा। भारत में यह कार्यक्रम 20 नवंबर को उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में सबसे पहले शुरू किया जायेगा।

20 नवंबर को गाजियाबाद में पांच दिवसीय पाठ्यक्रम

भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACE) अगले माह कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर आधारित एक छोटा सा कोर्स पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए तैयार है। 20 नवंबर को गाजियाबाद में चालू होने वाले इस पांच दिवसीय पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को कृषि में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के मांग और उसके फायदों से जुड़ी जानकारी प्रदान करना है।

किसान आसानी से कर पाएं तकनीक का इस्तेमाल

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी ने कृषि क्षेत्र में बहुत सारे बड़े परिवर्तन किए हैं। इसकी मदद से आज हम विभिन्न प्रकार की तकनीकों को अपना कर कृषि को उन्नत बना रहे हैं। यही कारण है कि इससे उत्पादकता में काफी बढ़ोतरी देखी जाती है। उपग्रहों एवं अन्य अंतरिक्ष-आधारित संपत्तियों से डेटा का इस्तेमाल करके, किसान फिलहाल बेहतर ढ़ंग से खेती से जुड़ी जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही अपनी खेती से संबंधित समस्त कार्यों को अच्छी तरह से कर सकते हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी द्वारा चलाई जा रही कृषि तकनीकी किसानों को सटीक कृषि कार्यों को अपने क्षेत्रों में और भी सशक्त बनाती हैं। इसके साथ ही, यह मौसम पूर्वानुमान और जलवायु डाटा आदि विभिन्न प्रकार की सुविधाओं को सुगम बनाता है। इसकी सहायता से किसानों को ज्यादा सटीकता के साथ अपने रोपण और कटाई कार्यक्रम की योजना तैयार करने की अनुमति मिलती है।

कृषि सुरक्षा में सहयोगी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान की गई वक्त पर मौसम की चेतावनी फसलों को बोने से लगाकर उनके संरक्षण सुरक्षा तक की भविष्यवाणी करती है। इसके साथ में किसानों को अपनी फसलों को बुवाई से पहले अथवा बुवाई के उपरांत उनको कटाई बुआई आदि के लिए तैयार रखने की जानकारी बड़ी ही सुगमता से मिल जाती है। आज अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी खेती-बाड़ी में एक जरूरी संसाधन बन गया है। जो कि किसानों को विभिन्न प्रकार से सतर्क रखने के साथ ही उनकी पैदावार को बढ़ाती है।

नारियल और जैतून के तेल से होने वाले शारीरिक लाभ, इनमें कितना अंतर है

नारियल एवं जैतून दोनों तेल का उपयोग खाने के लिए किया जाता है। इनके औषधीय गुणों की वजह विगत कई सालों से बाजार में इसकी मांग लगातार बढ़ती जा रही है।

खाना तैयार करने के लिए हम कई तरह के खाद्य तेलों का इस्तेमाल करते हैं। यह तेल हमारे रोजमर्रा के आहार का एक मूलभूत हिस्सा है और यह हमारे पसंदीदा व्यंजनों का स्वाद बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। नारियल और जैतून का तेल अपने स्वास्थ्य लाभों की वजह से जाने जाते हैं और इनके औषधीय गुणों की वजह से विगत कई वर्षों से बाजार में मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। चलिए आज हम इस लेख में आपको खाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले नारियल तथा जैतून के तेल की विशेषताऐं बताने जा रहे हैं। नारियल और जैतून के तेल से तैयार किया गया भोजन काफी स्वादिष्ट होता है।

नारियल का तेल किस तरह निकलता है

नारियल का तेल पके हुए नारियल के गूदे से निकाला जाता है। इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में खाद्य के रुप में बहुत ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। आपको बता दें कि नारियल के तेल में काफी ज्यादा मात्रा में फैटी एसिड होता है, जिसका ज्यादा सेवन हमारे शरीर को नुकसान पहुंचा सकता है।

नारियल तेल का सेवन करने से होने वाले लाभ

नारियल तेल वजन कम करने में अहम भूमिका निभाता है
नारियल तेल का इस्तेमाल वजन कम करने के लिए किया जा सकता है। तेल में मीडियम चेन फैटी एसिड की भाँति लॉरिक एसिड, कैप्रेटेलिक एसिड और कैपरिक एसिड होते हैं, जो हमारे शरीर का वजन घटाने में सहायता करते हैं।

नारियल तेल और जैतून

नारियल के तेल से बेहतरीन पाचन होता है
नारियल के तेल से शरीर में अच्छा पाचन होता है। नारियल तेल का इस्तेमाल खाना पकाने में करने से हमारे शरीर का पाचन तंत्र बेहतर ढ़ंग से कार्य करता है। इसके अतिरिक्त यह इर्रिटेबल बॉवल सिंड्रोम जैसे कि कब्ज, डायरिया एवं गैस से संबंधित समस्याओं के लिए भी लाभदायक होता है।

नारियल का तेल डायबिटीज में फायदेमंद है

नारियल तेल को मधुमेह के उपचार के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। रिसर्च के मुताबिक, वर्जिन कोकोनट ऑयल में डायबिटीज नियंत्रित करने की क्षमता होती है, जिसका इस्तेमाल मधुमेह से जुड़े रोगियों को जरूर करना चाहिए।

जैतून के तेल के कितने फायदे होते हैं

जैतून का तेल मॉइस्चराइजिंग गुणों से युक्त होता है। बतादें, कि इसका नियमित रूप से इस्तेमाल करना हमारे शरीर को बहुत सारी बीमारियों एवं स्वास्थ्य समस्याओं से बचाता है। जैतून के तेल के अंदर विटामिन-ई, विटामिन के, आयरन, ओमेगा-3 फैटी एसिड, मिनरल और एंटीऑक्सीडेंट विघमान रहते हैं।

जैतून के तेल का उपयोग आंखों का बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करता है

आजकल हम सारा दिन कंप्यूटर, टीवी एवं मोबाइल पर कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में आँखों के विशेष ख्याल के लिए आपको अपने खाने में जैतून के तेल का उपयोग करना चाहिए। इसका सेवन करने से आपकी आंखों के आसपास रक्त संचार बढेगा। साथ ही, थकान भी दूर हो जाती है।

गेहूं की यह नई किस्म मोटापे और डायबिटीज के लिए रामबाण साबित होगी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के प्लांट ब्रीडिंग जेनेटिक्स डिपार्टमेंट ने गेंहू की PBW RS1 किस्म को विकसित किया है। इससे किसानों को कम लागत। यह किस्म मोटापे और शुगर के इंसुलेशन के स्तर को बढ़ने नहीं देती है। यह किस्म हमारे शरीर के लिए काफी फायदेमंद साबित होगी।

गेंहू रबी सीजन की एक सबसे प्रमुख फसल है। साथ ही, यह खाने के मकसद से काफी पौष्टिक अनाज है। इसको अधिकांश लोग आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। ज्यादातर लोग गेंहू के आटे से निर्मित रोटियों का सेवन करते हैं। किसान गेंहू की फसल से काफी अच्छी आमदनी भी कर लेते हैं। साथ ही, लुधियाना स्थित पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के प्लांट ब्रीडिंग एंड जेनेटिक्स डिपार्टमेंट ने गेहूं की एक ऐसी किस्म तैयार की है, जो मोटापे एवं शुगर के इन्सुलिन स्तर को बढ़ने नहीं देगी। इस वजह से गेहूं की ये किस्म सेहत के लिए काफी लाभदायक साबित होगी। इस बार रबी के सीजन में किसानों को यह बीज लगाने के लिए प्रदान किया जाएगा। साथ ही, इसकी फसल को किस तरह तैयार करना है, इसका प्रशिक्षण भी किसान भाइयों को दिया जाएगा।

गेहूं की PBW RS1 किस्म कितने समय में तैयार होती है

सामान्य तौर पर आपने सुना होगा कि जो भी लोग मोटापे से ग्रसित होते हैं, उन्हें गेहूं का सेवन करने के लिए डॉक्टर मना कर देते हैं। परंतु, पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के प्लांट ब्रीडिंग एंड जेनेटिक्स डिपार्टमेंट के कृषि वैज्ञानिकों ने लगभग 8 से 10 साल में गेहूं की बहुत सी किस्मों पर शोध कर के PBW RS1 किस्म तैयार किया है, जिसको खाने से अब डॉक्टर भी मना नहीं करेंगे। क्योंकि गेहूं की ये नई किस्म मोटापे को रोकने में सहायता करेगी।

PBW RS1 गेहूं के क्या-क्या लाभ हैं

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा गेहूं की ये जो स्पेशल किस्म विकसित की है इसके अनेकों लाभ हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी ही फायदेमंद साबित होगा। इस गेहूं का नियमित सेवन करने से मोटापे एवं शुगर जैसी समस्या पर काबू पाया जा सकता है। इस गेहूं की किस्म में न्यूट्रा सिटिकल वैल्यूज अधिक हैं। इसमें रेजिस्टेंस स्टार्च का कॉन्टेंट भी उपलब्ध है।

विकसित की गई गेहूं की यह नवीन किस्म 2024 अप्रैल माह के पश्चात बाजार में मिलेगी

इसके दाने डायबिटिक मरीजों के लिए भी काफी लाभकारी साबित होंगे। यह फाइबर की भांति शीघ्र ही डाइजेस्ट हो जाएगी। यह गेहूं 2024 अप्रैल महीने के बाद से बाजार में मौजूद रहेगी। वहीं, इस नए बीज की फसल तो कम होगी, परंतु बाजार में इसका भाव ज्यादा मिलेगा।

पशुपालन-पशुचारा

भेड़-बकरियों में होने वाले पीपीआर रोग की रोकथाम व उपचार इस प्रकार करें

भेड़-बकरियों को विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ होती हैं, जिसमें से एक पीपीआर रोग भी शम्मिलित है। यह गंभीर बीमारी भेड़-बकरियों को पूर्णतय कमजोर कर देती है। परंतु, अगर आप शुरू से ही पीपीआर रोग का टीकाकरण एवं दवा का प्रयोग करें, तो भेड़-बकरियों को संरक्षित किया जा सकता है। साथ ही, इसकी रोकथाम भी की जा सकती है।

बहुत सारे किसानों और पशुपालकों की आधे से ज्यादा भेड़-बकरियां अक्सर बीमार ही रहती हैं। अधिकांश तौर पर यह पाया गया है, कि इनमें पीपीआर (PPR) बीमारी ज्यादातर होती है। PPR को 'बकरियों में महामारी' अथवा 'बकरी प्लेग' के रूप में भी जाना जाता है। इसी वजह से इसमें मृत्यु दर सामान्य तौर पर 50 से 80 प्रतिशत होती है, जो कि बेहद ही गंभीर मामलों में 100 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। आज इस लेख के माध्यम से हम आपको बताऐंगे भेड़-बकरियों में होने वाली बीमारियों और उनकी रोकथाम के बारे में।

आपको ज्ञात हो कि पीपीआर एक वायरल बीमारी है, जो पैरामाइक्सोवायरस (PARAMYXOVIRUS) की वजह से उत्पन्न होती है। विभिन्न अन्य घरेलू जानवर एवं जंगली जानवर भी इस बीमारी से संक्रमित होते रहते हैं। परंतु, भेड़ और बकरी इस बीमारी से सर्वाधिक संक्रमित होने वाले पशुओं में से एक हैं।

भेड़-बकरियों में इस रोग के होने पर क्या संकेत होते हैं

इस रोग के चलते भेड़-बकरियों में बुखार, दस्त, मुंह के छाले तथा निमोनिया हो जाता है, जिससे इनकी मृत्यु तक हो जाती है। एक अध्ययन के अनुसार भारत में बकरी पालन क्षेत्र में पीपीआर रोग से साढ़े दस हजार करोड़ रुपये की हानि होती है। PPR रोग विशेष रूप से कुपोषण और परजीवियों से पीड़ित मेमनों, भेड़ों एवं बकरियों में बेहद गंभीर और घातक सिद्ध होता है।

इससे इनके मुंह से ज्यादातर दुर्गंध आना एवं होठों में सूजन आनी चालू हो जाती है। आंखें और नाक चिपचिपे अथवा पुटीय स्राव से ढक जाते हैं। आंखें खोलने और सांस लेने में भी काफी कठिनाई होती है।

कुछ जानवरों को गंभीर दस्त तो कभी-कभी खूनी दस्त भी होते हैं। पीपीआर रोग गर्भवती भेड़ और बकरियों में गर्भपात का कारण भी बन सकता है। अधिकांश मामलों में, बीमार भेड़ व बकरी संक्रमण के एक सप्ताह के भीतर खत्म हो जाते हैं।

पीपीआर रोग का उपचार एवं नियंत्रण इस प्रकार करें

पीपीआर की रोकथाम के लिए भेड़ व बकरियों का टीकाकरण ही एकमात्र प्रभावी तरीका है। वायरल रोग होने की वजह से पीपीआर का कोई विशिष्ट उपचार नहीं है। हालांकि, बैक्टीरिया एवं परजीवियों पर काबू करने वाली औषधियों का इस्तेमाल करके मृत्यु दर को काफी कम किया जा सकता है। टीकाकरण से पूर्व भेड़ तथा बकरियों को कृमिनाशक दवा देनी चाहिए। सबसे पहले स्वस्थ बकरियों को संक्रमित भेड़ तथा बकरियों से अलग बाड़े में रखा जाना चाहिए, जिससे कि रोग को फैलने से बचाया जा सके। इसके पश्चात बीमार बकरियों का उपचार शुरू करना चाहिए।

फेफड़ों के द्वितीयक जीवाणु संक्रमण को नियंत्रित करने हेतु पशु चिकित्सक द्वारा निर्धारित एंटीबायोटिक्स औषधियों (ANTIBIOTICS) का इस्तेमाल किया जाता है। आंख, नाक और मुंह के समीप के घावों को दिन में दो बार रुई से अच्छी तरह साफ करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मुंह के छालों को 5% प्रतिशत बोरोग्लिसरीन से धोने से भेड़ और बकरियों को काफी लाभ मिलता है।

बन्नी नस्ल की भैंस देती है 15 लीटर दूध, जानिए इसके बारे में

बन्नी भैंस पाकिस्तान के सिंध प्रान्त की किस्म है, जो भारत में गुजरात प्रांत में दुग्ध उत्पादन के लिए मुख्य रूप से पाली जाती है। बन्नी भैंस का पालन गुजरात के सिंध प्रांत की जनजाति मालधारी करती है। जो दूध की पैदावार के लिए इस जनजाति की रीढ़ की हड्डी मानी जाती है। बन्नी नस्ल की भैंस गुजरात राज्य के अंदर पाई जाती है। गुजरात राज्य के कच्छ जनपद में ज्यादा पाई जाने की वजह से इसे कच्छी भी कहा जाता है। यदि हम इस भैंस के दूसरे नाम 'बन्नी' के विषय में बात करें तो यह गुजरात राज्य के कच्छ जनपद की एक चरवाहा जनजाति के नाम पर है। इस जनजाति को मालधारी जनजाति के नाम से भी जाना जाता है। यह भैंस इस समुदाय की रीढ़ भी कही जाती है।

भारत सरकार ने 2010 में इसे भैंसों की ग्यारहवीं अलग नस्ल का दर्जा हांसिल हुआ

बाजार में इस भैंस की कीमत 50 हजार से लेकर 1 लाख रुपये तक है। यदि इस भैंस की उत्पत्ति की बात की जाए तो यह भैंस पाकिस्तान के सिंध प्रान्त की नस्ल मानी जाती है। मालधारी नस्ल की यह भैंस विगत 500 सालों से इस प्रान्त की मालधारी जनजाति अथवा यहां शासन करने वाले लोगों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण पशुधन के रूप में थी। पाकिस्तान में अब इस भूमि को बन्नी भूमि के नाम से जाना जाता है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि भारत के अंदर साल 2010 में इसे भैंसों की ग्यारहवीं अलग नस्ल का दर्जा हांसिल हुआ था। इनकी शारीरिक विशेषताएं अथवा दुग्ध उत्पादन की क्षमता भी बाकी भैंसों के मुकाबले में काफी अलग होती है। आप इस भैंस की पहचान कैसे करें।

बन्नी भैंस की कितनी कीमत है

दूध उत्पादन क्षमता के लिए पशुपालकों में प्रसिद्ध बन्नी भैंस की ज्यादा कीमत के कारण भी बहुत सारे पशुपालक इसे खरीद नहीं पाते हैं। आपको बता दें एक बन्नी भैंस की कीमत 1 लाख रुपए से 3 लाख रुपए तक हो सकती है।
बन्नी भैंस की क्या खूबियां होती हैं

बन्नी भैंस का शरीर कॉम्पैक्ट, पच्चर आकार का होता है। इसके शरीर की लम्बाई 150 से 160 सेंटीमीटर तक हो होती है। इसकी पूंछ की लम्बाई 85 से 90 सेमी तक होती है। बतादें, कि नर बन्नी भैंसा का वजन 525-562 किलोग्राम तक होता है। मादा बन्नी भैंस का वजन लगभग 475-575 किलोग्राम तक होता है। यह भैंस काले रंग की होती है, लेकिन 5% तक भूरा रंग शामिल हो सकता है। निचले पैरों, माथे और पूंछ में सफ़ेद धब्बे होते हैं। बन्नी मादा भैंस के सींग ऊर्ध्वाधर दिशा में मुड़े हुए होते हैं। साथ ही कुछ प्रतिशत उलटे दोहरे गोलाई में होते हैं। नर बन्नी के सींग 70 प्रतिशत तक उल्टे एकल गोलाई में होते हैं। बन्नी भैंस औसतन 6000 लीटर वार्षिक दूध का उत्पादन करती है। वहीं, यह प्रतिदिन 10 से 18 लीटर दूध की पैदावार करती है। बन्नी भैंस साल में 290 से 295 दिनों तक दूध देती है।

मिट्टी की सेहत - खाद

शानदार उपज पाने के लिए सॉइल हेल्थ कार्ड योजना के जरिए मिट्टी की जांच कराऐं

किसान भाई बेहतरीन फसल पैदावार के लिए खेत की मृदा की जांच अवश्य कराएं। मृदा की जाँच कराने हेतु सॉइल हेल्थ कार्ड बनवाना पड़ेगा। किसानों को फायदा पहुंचाने के लिए सरकार विभिन्न योजनाएं चला रही हैं। किसान फसल की बेहतरीन उपज प्राप्त कर सकें। इसके लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (SOIL HEALTH CARD) चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत किसान भाई अपने खेत की मृदा की जांच कराते हैं। जाँच कराने के बाद रिपोर्ट के आधार पर खेती करते हैं, जिससे उनकी काफी कम लागत आती है। साथ ही, उत्पादन भी काफी अच्छा होता है।

किसानों के खेत की मृदा जाँच करने के लिए प्रयोगशालाएं निर्मित की गई हैं। जहां वैज्ञानिक मृदा की जांच के उपरांत उसमें मौजूद गुण व दोष की सूची तैयार करते हैं। इस सूची में मिट्टी से जुड़ी जानकारी एवं सटीक सलाह होती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अंतर्गत खेती करने पर किसानों को बेहतरीन फसल पैदावार हांसिल होती है। साथ ही, मृदा का भी संतुलन स्थिर बना रहता है।

सॉइल हेल्थ कार्ड बनवाने का तरीका

सॉइल हेल्थ कार्ड तैयार कराने के लिए कृषक भाईयों आपको सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट SOILHEALTH.DAC.GOV.IN पर जाना है। उसके बाद होम पेज पर मांगी गई जानकारी को भरकर लॉगिन करना है। अब पेज खुलने पर राज्य का चयन करें। अगर आप पहली बार आवेदन कर रहे हैं, तो आपको पंजीकृत न्यू यूजर के विकल्प का चयन करना पड़ेगा। किसान भाई आवेदन फॉर्म में मांगी गई समस्त डिटेल्स सही-सही भरें। इसके उपरांत सबमिट बटन पर क्लिक कर दें।

किसी दिक्कत परेशानी का सामना करना पड़े तो किसान भाई हेल्पलाइन नंबर 011-24305591 और 011-24305948 पर भी सम्पर्क साध सकते हैं। वहीं, इसके अतिरिक्त HELPDESK-SOIL@GOV.IN पर ई-मेल भी किया जा सकता है।

सॉइल हेल्थ कार्ड योजना के फायदे

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस योजना के अंतर्गत कोई भी भारतीय किसान अपने खेत की मृदा की आसानी से जांच करवा सकता है। इस कार्ड के माध्यम से किसान जानकारी ले सकते हैं, कि मृदा में किन पोषक तत्वों का अभाव है। साथ ही, कितना जल उपयोग करना है और किस फसल की खेती करने से उन्हें अधिक फायदा मिलेगा। कार्ड बन जाने के उपरांत किसान को उत्पादक क्षमता, मिट्टी में नमी का स्तर, मृदा की सेहत, क्वालिटी के साथ-साथ मृदा की कमजोरियों को सुधारने के तरीकों की भी जानकारी प्रदान की जाती है।

सॉयल हैल्थ कार्ड
स्वस्थ धरा, खेत हरा

सॉइल हेल्थ कार्ड योजना

विश्व खाद्य दिवस 2023 से जुड़ी ऐतिहासिक जानकारियां

विश्व खाद्य दिवस प्रत्येक वर्ष 16 अक्टूबर के दिन मनाया जाता है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भूख से निपटने और खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए एक मुहिम है। विश्व खाद्य दिवस 2023 की थीम "जल ही जीवन है, जल ही भोजन है" पर आधारित है।

विश्व खाद्य दिवस प्रत्येक वर्ष 16 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भूख से निपटने और खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए एक मुहिम है। विश्व खाद्य दिवस 2023 की थीम "जल ही जीवन है, जल ही भोजन है". इस मुहिम के माध्यम से विश्व भर के संगठन एक जुट होकर वैश्विक भुखमरी और खाद्य सुरक्षा को लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नागरिकों एवं दुनियाभर की सरकारों को जागरूक करने की कोशिश करेंगे। वर्तमान में यह दिवस 150 देशों और 50 से ज्यादा भाषाओं के साथ पूरी दुनिया भर में मनाया जा रहा है। इसमें राष्ट्रीय स्तर की सरकारों से लेकर कॉर्पोरेट जगत, किसान और आम नागरिक सभी शम्मिलित होते हैं।

एम.एस. स्वामीनाथन को इस दिन के लिए याद किया जा रहा है

भारत में हरित क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन की कोशिशों के चलते आज दुनिया के विभिन्न देशों को भारत खाद्यान्न उपलब्ध करा रहा है। विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर दुनियाभर में आज एम.एस. स्वामीनाथन प्रमुख व्यक्तियों की श्रेणी में स्मरणीय हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 1960 के दशक के दौरान इन्होंने भारत में अधिक उत्पादन वाली किस्म (एचवाईवी) के बीज, खेती के मशीनी उपकरण, सिंचाई तंत्र, खाद और कीटनाशक के उपयोग पर बल दिया था। नतीजतन, आज भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा खाद्य निर्यातक देश है।

विश्व खाद्य दिवस 2023 की थीम किस पर आधारित है

संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन की स्थापना के साथ ही इस दिवस को वैश्विक पहचान मिल पाई थी। यह एक वैश्विक वार्षिक कार्यक्रम है, जो दुनियाभर में एक साथ एक विषय के लिए मनाया जाता है। विश्व खाद्य दिवस 2023 की थीम "जल ही जीवन है, जल ही भोजन है" पर आधारित है।

जानें विश्व खाद्य दिवस के इतिहास के बारे में

बतादें, कि इसकी शुरुआत वर्ष 1945 से होती है। जब संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन को स्थापित किया गया। इसी के साथ इसे वर्ष 1979 में 20वें एफएओ सम्मलेन में वैश्विक रूप से मान्यता प्रदान की गई। आज दुनियाभर के 150 से अधिक देश इस दिवस को एक साथ मिल कर मनाते हैं। वहीं, खाद्य सुरक्षा और भुखमरी जैसे विषयों पर जागरूकता फैलाने का कार्य करते हैं।

पारंपरिक खेती छोड़ रोहित ने शुरू की जिरेनियम की खेती, अब कमा रहा है लाखों का मुनाफा

जैसा कि हम जानते हैं, कि विगत कुछ वर्षों में कृषि क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। कृषि क्षेत्र में आधुनिक उपकरणों समेत नवीन तकनीकों को भी अपनाया जा रहा है। इससे किसान भाइयों को कम वक्त में अच्छी पैदावार का फायदा मिल रहा है। साथ ही, कुछ किसान पारंपरिक खेती से हटकर नवीन तरीकों का उपयोग करके लाखों की आमदनी कर रहे हैं।

वर्तमान काल में किसान पारंपरिक खेती को छोड़कर नवीन फसलों की पैदावार कर रहे हैं। किसान फिलहाल गेहूं-धान जैसी फसलों पर आश्रित न होकर नगदी फसलों पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। इससे उनको वक्त की बचत के साथ-साथ कम लागत में ज्यादा मुनाफा प्राप्त हो जाता है। आज हम आपको एक ऐसे ही किसान के बारे में बताऐंगे, जिन्होंने पारंपरिक खेती छोड़कर परफ्यूम फार्मिंग शुरू कर लाखों की आमदनी कर कर डाली है।

किसान रोहित कवलपुर गांव के मूल निवासी हैं

दरअसल, रोहित मुले नामक किसान की यह कहानी है, जो कि महाराष्ट्र के सांगली में कवलपुर गांव के मूल निवासी हैं। तीन वर्ष पूर्व वह भी आम किसानों की तरह ज्वार, अंगूर की खेती करते थे। परंतु, बाढ़, ओलावृष्टि एवं विभिन्न वजहों से बहुत बार फसल में हानि उठानी पड़ती थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने कुछ अलग करने के विषय में सोचा और बहुत सारे स्थानों की यात्रा के साथ-साथ विभिन्न तरीकों की खेती के विषय में जानकारी इकट्ठी की। इस दौरान उनका ध्यान जिरेनियम की खेती पर गया। उन्हें जानकारी मिली कि जिरेनियम, लैवेंडर एवं लेमन ग्रास की भांति ही परफ्यूम प्लांट है। इन समस्त पौधों की पत्तियों से निकलने वाले तेल का उपयोग इशेंसियल ऑयल्स एवं परफ्यूम आदि में होता है।

किसान रोहित ने जिरेनियम का उत्पादन करना शुरू किया

रोहित ने पांच एकड़ की भूमि पर जिरेनियम की खेती चालू कर दी है। इस दौरान उन्होंने कहा है, कि जिरेनियम की खेती बीज से नहीं बल्कि कटिंग के माध्यम से की जाती है। जिरेनियम के शूट्स को नर्सरी में नवीन पौधे तैयार करने के लिए उपयोग करते हैं।

जिरेनियम की खेती के लिए उपयुक्त तापमान क्या है

जिरेनियम उत्पादक किसान रोहित का कहना है, कि जिरेनियम की खेती के लिए सामान्य तापमान 30-35 डिग्री के मध्य होना चाहिए। ऐसे तापमान में आसानी से जिरेनियम की खेती की जा सकती है। एक एकड़ में जिरेनियम के 12000 पौधे रोपे जाते हैं। इसके अतिरिक्त, जिरेनियम की सिंचाई के लिए ड्रिप इरीगेशन (DRIP IRRIGATION) प्रणाली होनी चाहिए।

जिरेनियम के पौधे की कितनी समयावधि होती है

किसान रोहित का कहना है, कि जिरेनियम खेती की पहली कटिंग के पश्चात प्रत्येक साढ़े तीन माह में इसकी फसल हांसिल की जा सकती है। इसके पौधे तीन वर्ष तक रहते हैं। इस प्रकार से हर तीन महीने में वह लाखों की आमदनी कर लेते हैं। उनका कहना है, कि खेती से 150 किलो जिरेनियम का तेल अर्जित होता है, जिसकी आमदनी 12 लाख रुपये होती है।

महिला किसान स्मारिका चंद्राकर ने MNC कंपनी से लाखों की नौकरी छोड़ खेती को चुना

आज हम मेरीखेती के इस लेख में आपको एक सफल महिला किसान स्मारिका चंद्राकर के विषय में बताऐंगे। बतादें, कि महिला किसान के कृषि फार्म में 19 एकड़ में बैंगन और टमाटर लगा हुआ है। हालाँकि, इससे पूर्व उसी खेत में अन्य बागवानी फसलें जैसे कि खीरा, करेला और लौकी लगा हुआ था। दरअसल, स्मारिका का बचपन गांव में बीता है, इसके बाद वह पढ़ाई करने के लिए पुणे चली गई हैं। परंतु, वह पुनः गांव में ही आकर बस गई। अब वह आत्मनिर्भर किसान है।

कृषि वर्तमान में एक व्यवसाय भी बन गया है। नवीनतम एवं उन्नत तकनीकों के आने से पूर्व की तुलना में फल, सब्जी और अनाजों का उत्पादन भी गढ़ गया है। इससे किसानों की आय काफी बढ़ गई है। यही कारण है, कि अब पढ़े-लिखे युवा भी लाखों रुपये महीने की नौकरी छोड़ कर खेती- किसानी की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। परंतु, आज हम एक ऐसी युवती के विषय में जानकारी देंगे, जो नौकरी छोड़ने के उपरांत खेती से करोड़पति बन गई। वर्तमान में अन्य दूसरे लोग भी युवती से खेती करने की बारीकी सीख रहे हैं।

स्मारिका चंद्राकर मूलतयः कहाँ की रहने वाली है

दरअसल, हम जिस युवती के विषय में चर्चा कर रहे हैं, उसका नाम स्मारिका चंद्राकर है। वह छत्तीसगढ़ के धमतरी जनपद स्थित कुरुद प्रखंड के चरमुड़िया गांव की मूल निवासी हैं। स्मारिका चंद्राकर ने पुणे महाराष्ट्र से एमबीए पास है। साथ ही, उसने कम्प्यूटर साइंस में बीई भी कर रखी है। पहले वह मल्टीनेशनल कंपनी में 15 लाख रुपए के वार्षिक पैकेज पर नौकरी किया करती थी। बतादें, कि सबकुछ अच्छा चल रहा था। इसी दौरान उसके पिताजी की तबीयत खराब हो गई। यही स्मारिका चंद्राकर के लिए टर्निंग प्वांइट साबित हुआ।

स्मारिका चंद्राकर बागवानी से जबरदस्त उत्पादन प्राप्त कर रही हैं

स्मारिका चंद्राकर का कहना है, कि उसके पिता के पास गांव में काफी ज्यादा भूमि है। उन्होंने वर्ष 2020 में 23 एकड़ भूमि पर सब्जी की खेती चालू की थी। परंतु, स्वास्थ्य खराब होने के चलते वे बेहतर ढ़ंग से खेती नहीं कर पा रहे थे। ऐसे में स्मारिका चंद्राकर ने नौकरी छोड़ गांव आकर अपने पिता के साथ खेती में सहयोग करना शुरू कर दिया। उसके बाद देखते ही देखते वह वैज्ञानिक ढ़ंग से अपने समस्त भू-भाग पर खेती शुरू कर दी। उसने मृदा की गुणवत्ता के मुताबिक ही फसल का चुनाव भी किया। इससे उन्हें जबरदस्त उत्पादन प्राप्त होने लगा।

स्मारिका चंद्राकर की सब्जियों की सप्लाई कई राज्यों में होती है

बतादें, कि स्मारिका चंद्राकर ने कुछ रुपये खर्च कर अपने खेत को आधुनिक कृषि फार्म बना दिया। इसका लाभ यह हुआ कि अब स्मारिका चंद्राकर के धारा कृषि फार्म से प्रतिदिन 12 टन टमाटर और 8 टन बैंगन की पैदावार हो रही है। स्मारिका का वार्षिक टर्नओवर एक करोड़ रुपये से भी ज्यादा है। मुख्य बात यह है, कि स्मारिका न केवल खेती से आमदनी कर रही है, बल्कि 150 लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कर रखा है। स्मारिका के खेत में उगाए गए बैंगन और टमाटर की आपूर्ति उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और दिल्ली में भी होती है।

www.merikheti.com

Address: 5A-46, 6th Floor, Cloud9 Tower, Vaishali
Sector 1, Ghaziabad – 201010